

ASMA ARCHIVES

2006

I

ASMA ARCHIVES

श्रीकवचं, अमला, तिलक — ७ पत्र

सप्तशती, संक्षिप्त मूल १५

" तैवीरी नेपाली भाषा १६

७८

॥ श्रीगुरुदेवार्पणं नमः ॥ श्रीगुरुदेवार्पणं नमः ॥

आर्य समाज

ASHA ARCHIVES

2.006

I

१७० नमो भगवते ॥ ॥ साकेतं यदुवाच ॥ यदुद्भूय नर्मला कं सर्वे न का कर्नं नृणां । यत्र कस्यचिदाख्यातं तन्मोक्षद्विनितामह ॥ ॥
 वृक्षवाच ॥ अस्मिन्नुद्भूय नर्मला कं सर्वे न का कर्नं नृणां । दद्यात्सुकवर्चं यत्पुण्यं तदुद्भूय नर्मला कं ॥ २ ॥ पथं नर्मला कं पृथीयद्वितीयवर्चं नानि
 ति ॥ तृतीयवर्चं तदुद्भूय नर्मला कं ॥ ३ ॥ पथं नर्मला कं चतुर्थवर्चं तदुद्भूय नर्मला कं ॥ ४ ॥ पथं नर्मला कं पञ्चमवर्चं तदुद्भूय नर्मला कं ॥ ५ ॥
 ॥ ४ ॥ नवमं सिद्धिदा राव नवदुर्गं पुकी लिता ॥ ५ ॥ दुका यता निता मानि वृक्षं नवमहात्मना ॥ ६ ॥ अग्निना दक्ष मान मुनीं प्रमथ्य गताः
 नृणां विषमं दुर्गं नवदुर्गं पुकी लिता ॥ ७ ॥ नर्मला कं यत्पुण्यं तदुद्भूय नर्मला कं ॥ ८ ॥ नायकं तस्य यत्पुण्यं तदुद्भूय नर्मला कं ॥ ९ ॥ येन

रक्षसां नृणां नर्मला कं सिद्धिदा राव नवदुर्गं पुकी लिता ॥ १० ॥ अस्मिन्नुद्भूय नर्मला कं सर्वे न का कर्नं नृणां । साकेतं यदुवाच ॥
 राकी मात्री निविवाहना ॥ ११ ॥ का श्रीहंसमात्रा सर्वाद्याः ॥ खेवमात्रना । सर्वा रत्नं साताया नाना तत्त्वपरमाणिता ॥ १२ ॥ दृष्टं नर्मला कं नृणां
 दद्याः कोधमात्रना । नर्मला कं नृणां दद्याः कोधमात्रना । नर्मला कं नृणां दद्याः कोधमात्रना ॥ १३ ॥ रवटं नर्मला कं नृणां दद्याः कोधमात्रना ॥ १४ ॥ दृष्टं नर्मला कं नृणां
 गमिषु नर्मला कं नृणां दद्याः कोधमात्रना । नर्मला कं नृणां दद्याः कोधमात्रना ॥ १५ ॥ नर्मला कं नृणां दद्याः कोधमात्रना ॥ १६ ॥ नर्मला कं नृणां दद्याः कोधमात्रना ॥ १७ ॥
 हाव नर्मला कं नृणां दद्याः कोधमात्रना । नर्मला कं नृणां दद्याः कोधमात्रना ॥ १८ ॥ नर्मला कं नृणां दद्याः कोधमात्रना ॥ १९ ॥ नर्मला कं नृणां दद्याः कोधमात्रना ॥ २० ॥

क. न.
३

धरुलवाप्तेनी ॥ ३० ॥ दीक्षुकनालिनीनकाडामानिजाडुकनिनी । नामदूयभूकीमानीतुर्ववागध्वनीतथा ॥ ३१ ॥ नकुमहावसामासा
अहिमदीतिघाईनी । अग्निकालनाहीवविलुचमुकुटध्वनि ॥ ३२ ॥ यद्वावतीपद्मकायेकरुद्रगमनीतथा । कालामुखीनखाकाली
महेश्वरवैधियु ॥ ३३ ॥ शुक्लवस्त्रलिमनककायाहसुध्वनीतथा । अहिकानमनावृद्धिनेदमेधर्मजाविनी ॥ ३४ ॥ खाद्यवारणी
तथाशानीसमानोदानमेवव । यनः कीलिकलक्ष्मीयसदानकीपुमागता ॥ ३५ ॥ नसूयवर्गधवसदस्यनीवयागिनी । सत्वीनजसुम
रुवत्रकनाजायनीतथा ॥ ३६ ॥ अयुर्मनकुरुवानाहीधर्मनकापुर्वेकवी । यथानीसूयथानकासार्जकमेकनीतथा ॥ ३७ ॥ नाज

नानविजयालक्ष्मीविजयासद्यसीसिता ॥ नकाहीनंउयस्मानवर्द्धिनीकवयेनउ ॥ ३८ ॥ तत्सर्वनकमेदविजयनीपायनानिनी । यदमकीनर्ग
कर्मयदिकुरुयात्मना ॥ ३९ ॥ कववेनावृत्तानित्यययवेगकति । तत्तत्तार्थलारुध्विजयेतर्चकामदी ॥ ४० ॥ यथैविकुयतकामेनी
जाप्रातिलीलमा । पनमेधर्ममपुल्लिखातिविपुल्लिपुमान् ॥ ४१ ॥ निर्हयाजायतेमर्त्यसीगुमपनाजिता । तिलाक्षुहवत्पूअकववेनावृत्ता
पुमान् ॥ ४२ ॥ दीपुदशाकववेदवानामपिदुल्लर । यः परेत्ययतानित्येतिनीधुगुदयानित ॥ ४३ ॥ दवीकलारुवहस्यनीलोक्षवापनाजि
तः । जीवद्वर्तसर्तसागमत्यमृत्पुविवर्द्धितः ॥ ४४ ॥ नयन्किवाधयस्सर्वलटाविल्लाटकादयः । कावर्जगमेवापिकोहिमप्रीतिपिद्विर्व ॥

च.क.
४

॥४४॥ अहिकानानि सुखादिर्न पर्यणानि ह गलं । हवनार्थं वनात् श्वेदकलजाभयदणिका ॥४५॥ सहका कलजा माला गकिनी किनी तथा
अहिकानि वनाद्याया गकिनी श्रममहावला ॥४६॥ गुरुह तविश्रया श्रय कर्णधर्वना कसा । वक्रना दसवतालाः कृष्णा पुहेन वादय ॥
॥४७॥ नभ्यकिर्दणाना रुस्य कवचद्वितीया । मीना अतिरुवेडा अरुता वृद्धि कर्णपरी ॥४८॥ यत्तसा कर्दुगसा पिकी हिमवि रतु रल । यजस
वसती वपुः कृत्वा पुकवचयूना ॥४९॥ यावद्मगुर्लधरुस रीलावन कानन । तावन्निवृत्तिमदिद्या सक्तः पूणपोषक ॥५०॥ दहाक वनरीतु
नी यत्तनेन पिदुलरी । जात्राति पूरुषानि र्यमहा माया प्रसादतः ॥५१॥ ॥ गूणि ग्रीह विहन पुष्प विन विन दद्या कवचरी पूरुष ॥ ॥

[illegible]

॥१०॥ बलिकुं सैतर्तमत्वा मज्जन्ती हिरुकि तः ॥ तूर्य ॥ ११ ॥ दक्षिणोत्तरमात्रा र्थदक्षिणोत्तरं सुखं ॥ १२ ॥ विदक्षि दविकल्पार्थं विदक्षि
नमाश्रित्य ॥ तूर्य ॥ १३ ॥ विधक्षि विधक्षि नार्ण विधक्षि वल मज्जकेः ॥ तूर्य ॥ १४ ॥ सता सननिनानत्ते निपुष्ट वनलम्बिक ॥ तूर्य ॥ १५ ॥ विधार्थः
तय र्मा र्थं तैल द्वाय तैल नैक न ॥ तूर्य ॥ १६ ॥ सुखलु देह द र्म द्वाय बलिकु पल ता यम ॥ तूर्य ॥ १७ ॥ अदु वक्तु वदु दैत सुत यन मन्धरी ॥ तूर्य ॥ १८ ॥
रुक्म नर्त सुत द वी ग स्वह र्मा सदा म्बिक ॥ तूर्य ॥ १९ ॥ हिमालय सता नाथ र्म सुत यन मन्धरी ॥ तूर्य ॥ २० ॥ द्वा नि पति सहा व पूजित यन मन्धरी
॥ तूर्य ॥ २१ ॥ दक्षिण वलु दा द्वा देह द र्म विना गिनी ॥ तूर्य ॥ २२ ॥ दक्षिण कर्मा ना द्वा मदका या द्वा दया म्बिक ॥ तूर्य ॥ २३ ॥ पत्नी मन्वाना यद्वीः

मना वलु नूता निनी ॥ तानिनी दुर्ग नर्त साग सागन स्य कला इवी ॥ २४ ॥ द्वा र्मा र्थं तैल द्वाय तैल नैक न ॥ २५ ॥ द्वा र्मा र्थं तैल द्वाय तैल नैक न ॥ २६ ॥
वनमा प्राप्ति सैयदः ॥ २७ ॥ ॥ ॥ द्वा र्मा र्थं तैल द्वाय तैल नैक न ॥ २८ ॥ ॥ ॥ द्वा र्मा र्थं तैल द्वाय तैल नैक न ॥ २९ ॥ ॥ ॥ द्वा र्मा र्थं तैल द्वाय तैल नैक न ॥ ३० ॥
वदु र्मा र्थं तैल द्वाय तैल नैक न ॥ ३१ ॥ ॥ ॥ द्वा र्मा र्थं तैल द्वाय तैल नैक न ॥ ३२ ॥ ॥ ॥ द्वा र्मा र्थं तैल द्वाय तैल नैक न ॥ ३३ ॥ ॥ ॥ द्वा र्मा र्थं तैल द्वाय तैल नैक न ॥ ३४ ॥
सिद्ध म्वा र्मा र्थं तैल द्वाय तैल नैक न ॥ ३५ ॥ ॥ ॥ द्वा र्मा र्थं तैल द्वाय तैल नैक न ॥ ३६ ॥ ॥ ॥ द्वा र्मा र्थं तैल द्वाय तैल नैक न ॥ ३७ ॥ ॥ ॥ द्वा र्मा र्थं तैल द्वाय तैल नैक न ॥ ३८ ॥
स्य क र्मा र्थं तैल द्वाय तैल नैक न ॥ ३९ ॥ ॥ ॥ द्वा र्मा र्थं तैल द्वाय तैल नैक न ॥ ४० ॥ ॥ ॥ द्वा र्मा र्थं तैल द्वाय तैल नैक न ॥ ४१ ॥ ॥ ॥ द्वा र्मा र्थं तैल द्वाय तैल नैक न ॥ ४२ ॥

च. की.
६

पुष्पकान्तःसमाकार्यं मयूखानतीषः निवर्तते ॥ १० ॥ सावित्रममवाप्नोति सर्वमेव नर्तयः । कृष्णार्थं वा वदुर्ध्वं मयूख्यं वा समाहितः ॥ ११ ॥
 ददाति प्रतिपत्तिं गृह्णाति नाश्रुत्येवायं निद्रामि । ॐ ह्रीं नृपयकीलेन महादेवेन कीर्तितः ॥ १२ ॥ यानि कीर्त्तयिष्ये नैति त्वं जयति स मे ॥ १३ ॥ सति हस्तगताः
 धिर्गन्धर्वजायत वनः ॥ १४ ॥ नर्वबाधवस्तुम्यत्तयं कायिदि जायतं ताल्यमृत्पुर्वनीया किमृत्पुमाक सवा प्रमात् ॥ १५ ॥ कृत्वा पात्रस्य कृत्वा सज्जकृत्वा रत्ना
 मितं प्रति । तदा कृत्वा देवस्यैव तन्मिदीयानस्य रत्नद्वयः ॥ १६ ॥ सौता ग्राहि वस्तु किं विना दत्तं कललनाजनेः । तत्सर्वं त्वत्पसादनं तनजा प्रमिदं गुरुम ॥ १७ ॥
 । तने मुजा प्रमाना सिन्हा र्त्तयै पलिकानकं । तव ह्यवसमग्रपिततः पात्रस्य मेव ततः ॥ १८ ॥ उष्यं त्वत्पसादनं सौता ग्राह्यं र्त्तयै दः । गुरुहानिपः

नामोक्तस्य गंगा दुर्दिष्टः ॥ १४ ॥ ॥ इति श्रीरामव्याकीर्तकं संपूर्णम् ॥ ५ ॥ ॥ ॥ ॥ सम्बत् २३२ जीवमुक्ता ॥

चंकी.

७

५

१७ नमः शिवाय ॥ ॥ मार्कण्डेय उवाच ॥ सावलिः ॥ ऊर्ध्वनि निधायानाम्पुत्रिनः मार्कण्डेय उवाच कथं न मार्कण्डेयपुत्रिनकनः ॥ ऊर्ध्वनि
निः सावलिः स्त्रीयाकायद्या प्रदुःखया विस्तान्तिनकनः कनदुःख ॥ १ ॥ ॥ नक्षत्रायायायतावनः ॥ अथ मनपनिबस अकनसः राजा अग्नि
यतिः सावलिः या प्रवदता ॥ २ ॥ ॥ स्त्रीया विस्तानाममनः अर्धकनसः ॥ क्रापीः ॥ अथर्वनायाकनउत्पत्तिराजः ॥ तत्रथनामनाकापृथ्वीया
अधिपतिः ॥ ३ ॥ ॥ अथ राजानः ॥ उवाच निधायकायकयगयाथः ॥ राजानिदानयानां ॥ जीर्णलिः ॥ कद्रुयादिनसः ॥ मन्मानकायानां ॥ अपनि

सूत्रथनाकावनापत्यायधकवयः ॥ ४ ॥ ॥ मिमृश लमानकां सूत्रथनाकाकोवदोऽहोदलीकनभूयः ॥ रुमायुद्धभयोप्यो युद्धमासुशलमां लेजित्यार
सुरथराजाहारदुःथो ॥ ५ ॥ ॥ ततः ॥ अथ ताहापदिः ॥ सुरथराजा आप्रानगरमा आप्रवसथो ॥ वैरिपद्धिवातः ॥ आउदैरहादुःखः ॥ वदो वैरि कोवलि
या तेजनसहि कनसकन्यादुःथो ॥ ७ ॥ ॥ अमा ॥ जसे सुरथराजा आफ्रासहरमा आउथो ॥ तसेवेलामा ॥ दुष्टवलवतजो ॥ अमात्यमंत्रिदुरुद्धः ॥ तनुलेराजा
कोभंडारपरिषोसिलिजो ॥ अपमानपनिगन्यादुःखः ॥ ८ ॥ ॥ ततो ॥ ताहापदिः ॥ तोराजा सिकारको निभुंगरिदुकमबंधभयापदिः ॥ एकलोघो रामावधिक
नः ॥ गहनवनजोदुःखः ॥ तस्मापसूनलाग्यो ॥ ९ ॥ ॥ सतवा ॥ वनमाजंडाजोडा ॥ एकजगामा ॥ मेधानामप्राज्ञराको ॥ एकआश्रमदेवन्याभयो ॥ कस्तो आश्र

म. मुनि. शिष्यले शोभित वाघर. वनमृगले. बहुते शोभित रहेछु ॥ १० ॥ तस्यो ॥ त्यस्ता आश्रममा. अलिक विआमगर्न कन वस्यो जा
रा जो छु. तस्को मेधा ले वदो सत्कार पूर्वक सो धनि निगर्थी. एता उता राजा हे छु त. मनमा विंता गर्थी ॥ ११ ॥ सो विं ॥ त्यो सुरधना मरा
जाममता ले बांध्या को मनमा भन्न पस्यो. मैले पाल्या को जो दरवार थियो त्यो आजु ही नै होला ॥ मरु ॥ मेरा जो भृत्य गुलाम छन. तनूले सदा
उन्मत्त ॥ जो मेरो भृर हाथि थियो. त्यो धर्म ले पाल्छु कि पाल्दैनन ॥ १२ ॥ मरु ॥ कि त्यो हाथी मेरो वैरि हरु का वश्य का वृभयो होला. जो
मेरा अनुगत पछि हिडन्या उलट्या. खानुला उनु पाउथ्या ॥ १३ ॥ अनु ॥ ति आज अरु को सेवा गर्दा हुं. मेरा जो भंडा म्या हरुले. भंडार को धा

२

नपनि नास्यो होला ॥ १४ ॥ संचित ॥ त्यो सुरधना मराजा. आपु मनमा वदो दुःख गरि शोक जुक्त भयि. यस्ता २ अने कवा त मनमा समुजि २
उदास हुं थ्यो ॥ १५ ॥ लत्र ॥ उसै वेला मा विप्र जो मेधा ब्राह्मण को रो. आश्रममा. एक वेश्य पनि देखि थ्यो. राजाले त्यो सहे उ सो धनि गर्दा आहा
आया को क्या अर्थ छु भंडा ॥ १७ ॥ सशो ॥ राजा सोध छन. अरि शोक ले जुक्त तलाइ दरबछो. दुर्मन मन तलाइ देख छु. यस्तो राजाले कः
स्यो को प्रीति वाक्य सुनि कन ॥ १८ ॥ प्रत्यु ॥ वेश्य उवाच ॥ स ॥ स्नेह लेन सित भया को वेश्य राजा छेउ. जवाव को उत्तरा दि थ्यो. वेश्य कहूँ छु. स
मा धिना मे वेश्य हुं. मवदा धनि महाजन का कुलमा मेरो जन्म छु ॥ १९ ॥ पुत्र ॥ छोरा हरुले. स्त्रि हरुले. धन लोभमा लागी कन. मलाइ

वनमाधवा येह स्वजनले दारा स्वासनिले हीन भया कोह ॥२०॥ वन ॥ येसे दुःख लेवनमा आइय स्या कोमी तहरु आ पस्त हा जु भाइले
मलाइ छोडा कोहु तन को कुशल पनि पाउनेन ॥२१॥ प्रह ॥ स्वजनमिब कोर दारा हरु को जहा वसिके हिवा त्रिपनि जादेन कि तन का
घर को कुशल मैले बालन पाउन्या भया ति मेरो कुशल सोधछुन कि कसो गर्छुन ॥२२॥ कथ ॥ राजो वाच ॥ येनि ॥ ति असत वृत्त मेरा
छोरा छुति कुना तर हर स्याहुं राजा भन्छुन हे वैश्य जो पुत्र धनमा थिलो भगरी तलाई वनमा धपाउन्या उनेमाथि ॥२३॥ तेषु ॥ तेरो प्रीतिको
अर्थ लेव्यो त्यो कहुं भन्दा वैश्य भन्छु क्यो गार मोह भया को होला जति ममाथि कुरा गन्या को बाज विरहेछु ॥२४॥ किंक ॥ क्यो गरु यो मेरो

मन निष्ठुर भाव जो देन जिनले पितृ को स्नेह त्याग गरि वनमा लुगाया को अज पनि ति नैमाथि प्रीतिको क्यो अर्थ छ ॥२५॥ पति ॥ जो विगुण
गंधवमाथि मेरो देरे प्रेम प्रवण भया को क्यो अर्थ होला तन को मोह मा थिलो ग्याले दोषित पनि भया दुर्वल पनि भया कोह ॥२६॥ कसो मि
॥ हेरा जा हो यो मेरा मन निष्ठुर कुना तर हले होला मार्कण्डेय भविष्य जो मे निछु उ भन्छु यस्तो तन का तन का आश्रममा कुरा कहानी गरि
दुइ जना मेधावाह छु उ ग्यावडा भयाह ॥२७॥ समा ॥ समाधिनाम वैश्यर सुरथनाम राजा आक्रान्तो कुरा थियो मेधा सुध्याउदैछु ति दुइ ज
ना कहन्छु ॥२८॥ उप ॥ अरु पनि केहि कथा कथा छन् आफु विस्तार पनि गर्नु भयाह राजा कहन्छु हे बागिरा होत पाइछु उर कथो क कुरो सुध्या

उछु उत्तराश्विगिरि कसनु होला ॥ २२ ॥ दुर्ग ॥ सो मेरो समममतामा अधिक भयाको अखिल संपूर्ण राज्यांगमा प्रीति वधाको कथा अर्थ होला ॥ २० ॥ जा :
नतो ॥ हे मुनि सत्तम मकसो गरि मूर्ख भयाको दुःखो वैश्य पनि स्यास्त्रिहो रा परिवार ले छोडा को छु ॥ २१ ॥ स्वज ॥ दाज्यू भाइ ले छोडा पछि अरु पनि निति नाथि
ठे र्खीति छु यस्तो मेरा पनि इस्का पनि मोहमा लागी दुःखी भयाको छु ॥ २२ ॥ दुष्ट ॥ ममता ले बाध्या काहा मि दुइ जना देखे दाई घेरे हम हाने भवि
हो मस्तो ज्ञान छु दाई दे मोहित भनु ॥ २३ ॥ ममा ॥ मेरो रयस्को विवेक अंधताको मूढता भयो मेधा भएन हे राजन समस्त जति भयाका प्राः
लीहृदयमा ज्ञान छु ॥ २४ ॥ विषय ॥ ज्ञान विषय सबका हृदय वस छु खाली मात्र भिन्न तरहको छु जाति पनि भिन्न तरहको छु कोइ प्रा

ली दिनमा आखा देखे देन कोइ प्राणी रातमा आखान देखे न्याहु छु ॥ २५ ॥ केवि ॥ कोइ प्राणी हरु दिनमा पनि रातमा पनि वेरोवर देखे न्या
छु न त्यस मानिसको ठुलो ठुलो बुद्धि छु ॥ २६ ॥ यतो ॥ जसकारण पशु पक्षि हरु मृग हरु पनि सबै निरुद्ध न त्यो ज्ञान मानिसको
मृग पक्षि का तुल्य छु ॥ २७ ॥ मनु ॥ मानिसको अरु जातिको मोह वेरोवर जानु पर्छ कथा अर्थ पतंग पक्षि परे वा आफ्नो बले केहि घान्या
कुरो ल्याउ छु न हेर ॥ २८ ॥ कर्न ॥ आफ्नो बालक लाइ छु बावु छु कथा अर्थ ले मेरा कालखकन भूषण लागला भनि खान दियो केहि राजा
हो त्यस्तो हो मानिस पनि छु रा हरु माथि प्रेम कनसा भिलाख गर्छु ॥ २९ ॥ लोभा ॥ मानिस त बालख छोरा लाइ छु लोभले भालि

मत्ता इहेला भनिपाल्पाको हेरहेर, तथा विमानिस्को मोह भवरिखाउला मानि सपन्याका छन ॥४०॥ महा ॥ हे भराजा हो तवै महामाया
को प्रभाव छ संसारको स्थिति गन्याति महामाया छन, यस्मा कनिसं देहन गर्नु योगनिडाको कारन छ ॥४१॥ महा ॥ विष्णु काने प्रमाव श्याकाः
जो योगनिडा छन तिज्ञानिका हृदय कनपनि तिनले यो संसार कनपनि मोहित गन्याको छ ॥४२॥ बलादा ॥ बलगरिकन पनि मोहमाथिले
जा छन तिनले जो बराबर संसार रखाको छ जगत् संसार उत्पत्ति हेतु छ ॥४३॥ लैला ॥ त्यो दुर्गा प्रसन्न भयापछि बरदान पनि दिछन मुक्तिः
को हेतु पनि तिनै छन तिसं तुष्ट भयापछि विद्याको हेतु भूत भइ मानिस्को मोह छ ॥४४॥ संसार ॥ राजोवाच ॥ भगनका ॥ बबी ॥ संसारका

बंधन हेतु सर्वेश्वरी तिनै छन राजा भन्छन हे भगवन् तिमिजस छे उच्च स्तोत्रकार पराक्रमवंत कहंछो तिनको क्या तरह महामाया नाउ भयो ति
मि कहु ॥ कस्ता तरह सितति उत्पन्न भइ तिनको कर्म पनि उत्पत्ति पनि प्रभाव पनि स्वरूप पनि भन ॥४५॥ तत्सर्व ॥ त्यो दुर्गाको विस्तार सुन कनव
कुतै छ छ तपा इले कहा जावस् मेधा भवि भन्छन हे राजा हो यस्ता तरह को दुर्गा छन तिनित्य स्वरूप छन जगत् सृष्टि छन तिनले यो सं
सार प्रकट गन्याको विस्तार भये छ ॥४६॥ तथापि ॥ त्यो धेरी प्रको सिततन को उत्पत्ति पराक्रम कहंछु सुन देवताको काज पुथौन कन प्रक
ट ज्यूना वेलामा उत्पत्ति भयाको छ ॥४७॥ उत्पत्ति ॥ त्यो कथा हारा प्रोम कहंछु तिनको नाउ नित्या छ जूना दिनमा योगनिडा ले अभिवाप्त वि

सुभया काथिया. सुकासी व समुदधि यो ॥ ४९ ॥ आसी ॥ त्वसदिनमाशेषनागकोशय्यागरिकल्यांतमा. प्रभुजोद्धभगवान्विसुत्या काथियोत
सदिनमाहुइ मधुकेटभदेत्यप्रधांतद ॥ ५० ॥ विष्णु ॥ विष्णुकाका न्यागुजिवाठजन्मभयाकोरहेछ. नाभिकमलमाविष्णुकाप्रधाधियात
कोनाशगर्नकनतयारहुंथो ॥ ५१ ॥ रुद्र ॥ ताहापहिरुकाग्रहदयलेवसिकनउग्रहुइदेत्यलेआहुकनहान्यादवलेदेबिकन
जनाईनसुत्याकारसाछवैरीहांनकनतयारभयाकोदेबिकन ॥ ५२ ॥ विष्णु ॥ विष्णुकोजागोहवसुभनिनेत्रमानिवासगर्न्याजोविष्णु
श्वरीजगदंसाहून. स्थितिसंहारकोगर्न्यास्वरूप ॥ ५३ ॥ निष्ठाभगवतीविष्णोरतुलोतेजसः प्रभो ॥ प्रलोवाय ॥ त्वंसाह ॥ विष्णुअतुल्यइश्वर

रेकोतेजद्वतनूकोनेत्रमानिवासगर्न्याकोक्ततिगच्छ ॥ ब्रह्माकह ॥ हेदेवितिमिराहास्वरूपस्वधास्वरूपवज्रकारस्वरूपस्वरूपत्वकाह ॥ ५४ ॥
सुधा ॥ सुधास्वरूपतिमिअक्षरस्वरूपतिमिनित्यास्वरूपतिमिमात्रास्वरूपतिमिअर्द्धमात्रास्वरूपतिमिअनुवार्यमात्रास्वरूपतिमि ॥ ५५ ॥ त्वमेव ॥ हे
देवितिमिसावित्रीस्वरूपजननीस्वरूपआफैहोतिमिलेसंसारकोपालगर्न्यान्याकोअंत्यगर्न्यान्याकोलृष्टिगर्न्यावेलामासृष्टिरूपस्थितिकादिन
मास्थितिस्वरूपतिमिआफैहो ॥ ५६ ॥ तथासं ॥ संसारहोगर्नमनलाग्योभन्यायसंसारकोसंहारहो. आपुजगन्मयहोमहाविद्यास्वरूपमाया
स्वरूपमहाविद्यास्वरूपस्मृतिसवरूपहो ॥ ५७ ॥ महामो ॥ महामोहस्वरूपनुमोह. महादेवीमहासूरस्वरूपनुमोह. सर्वजगत्संसारकोप्रकृतिस्वरूप

च. भा.
७

पहले ~~प्रतिमि~~ गुणत्रयले विभावित है ॥ पद ॥ लज्जा ॥ लज्जा रूप पुष्टिरूप तुष्टिरूप शान्तिरूप शान्तिरूप परमिनीतिमिद्वे शूलनीतिमिद्वे क्ली
तुमिद्वे ॥ ५९ ॥ शंखि ॥ शंखिनीतिमिधनुषधारी वराधारीतिमि ॥ भुशुण्डीर ॥ परिघ ॥ जस्ता आमुधत प्रोहातमाह्वयणतमाहातमाह्व ॥ सोम्यबाहिपनिदे
रराशेस्वरूपतमाह्व ॥ ६० ॥ परा ॥ परमबाहिपरमरूपतमाह्व ॥ हेपरमेश्वरी अखिलसंसारमावस्तु रूपज्याकेहि कल्याकोवस्तु स्वरूप सत् असत् ज्याकेहित
प्रोरूपह्व ॥ ६१ ॥ तस्यस ॥ अखिलजगत्मा शक्तिका सामर्थ्यरूपतमाह्व ॥ यस्ताउत्तमरूपकोवर्णनकोगर्ण सकलातिमिलेयसंसागरमारवनागर्ण्यजो
परब्रह्मह्व ॥ ६२ ॥ सोवि ॥ तिपनिनिद्रास्वरूपलेतिमिले ॥ वश्यकावृगराईहा ल्याउहो ॥ यस्तातमाह्वरूपकोस्तुतिकोर्गनसकलाहेईश्वर ॥ विष्णुशिवतमाः

कावृमाजायाकोट्ये ॥६४॥ कारि ॥ यस्तोतमोअथाहावरिचद्वयस्तावरिचकोवर्णनगर्णसिकलाउदारजोप्रभावद्वनननलेयुक्तहो ॥६५॥ मोहये ॥ हेदे
वितिमिलेदुईजनादेत्यलार्इमोहितगन्याजावसजगतस्वामीभगवान्जागोभईजाउंयोअजिह्व ॥६६॥ बोधश्च ॥ हेदेविद्वदुईदेत्यमरिजाउंभगवा
नजागोभईजाउं ॥ मेधाअविभद्वनहेराजाहोयस्तातरहसितप्रह्मलेदेविकोक्ततिगर्दी ॥६७॥ विष्णोः ॥ विष्णुकनजागद्वनकनमधुकैटभदेत्यकोना
नाशगर्नकनआखामानाकमाहातवाटवक्षःस्थलेदेवि ॥६८॥ निर्गम्य ॥ निस्किकनअव्यक्तजन्मावस्माकनदर्शनदीकनजनार्दनकनछादिआपुश्रीक
म्पउठिकनजडाहुंथ्या ॥६९॥ सकार्ण ॥ त्यसवेलामादेखद्वंतस्कार्णवपृथ्वीभयाकोरहेद्व ॥ मधुकैटभदेत्यषडाभयाकारखाद्वन्बडावलिः

लियापराक्रमिहन् ॥७०॥ क्रोधा॥ क्रोधलेलाललालआवागन्याकोरहेछु ब्रह्मलाइहानकनतयारभयाकारछाछन् त्यस्तोदैत्यकोदबलहे
रीभगवान्आफुत्तसंगलडाइगर्थ्य ॥७१॥ पंच॥ पाचहजारवर्षसंमविष्णुकोर दुइदैत्यकोलडाइभयो सुष्टि युद्धहुंदाहान्याकोहीपनिनही
हुंथ्यो। बललेउत्तमभयाकोदैत्यभंदुन सावास्तुपलडाइगरीस् वरमागभनिविष्णुदेउकहंथ्या ॥७२॥ उक्त॥ दैत्यकोयस्तोवाक्यसुनिनि
मिहुइदैत्यमेराबध्यभयाभनिविष्णुलेवरमागेछन् ॥७३॥ किमं॥ अहवरममाग्येनभनि मेधाअविभद्व हांदातहान तरपानिभयाकाजगा
माभनिजलमयपृथ्वीदेवीकनकस्यान् ॥७४॥ अवि॥ वावि॥ ॥ बिलो॥ जलमयमावडाभयाकोभगवान्देखिठगाइकोकुरागरीवरदानभगवान

लाइद्रियाथ्या ॥७५॥ अविस्वाच॥ तथे॥ मेधाअविभद्वन् विष्णुललौभनि रांस्वचक्रगदालीकनचक्रले जांचमाहुइयोकोशिरराविकनकारिफात्यो
॥७६॥ स्वमे॥ हेसुरधराजाहोपथमवरिवमायस्तातरह दुर्गापैदा भईब्रह्मलेस्ततिगन्याकोधियो यस्तोतनकोउभावद्व फेरितंपनितनुको
उत्पत्तिविस्तारकहंछु तिमिरासोगरिवितलाइसुन ॥७८॥ ॥ इतिमार्कण्डेयपुराणे ॥ १ ॥ अविस्वाच॥ देवासुर॥ मेधाअविभद्वन्हेराजाहो प
हिलेदेवताकोरदैत्यकोरकशयवर्षसंम इन्दुदेवतासंगमहिषासुरदैत्यकोबडोवडोलडाइहुंथ्यो ॥१॥ तत्रा॥ तहालडाइमादैत्यदेवताकोलडाइहुंदा
मादेवताकोकोरुसवहारपरीभागन्यादेवताजितिकनइंद्रपदवी महिषासुरदैत्यलेलीकनवसून्याभयो ॥२॥ ततः॥ ताहापद्धिहारपरीभाग्याकासव

देवता पद्मयोनिजो ब्रह्मा हंति अपि लार्कनज हाविष्म शिवस्याको जगत्पुग्ध्यो ॥ ३ ॥ यथा ॥ जस्तो रंडा इमा भयाको जस्तो विस्तारथियो महिमा सुरदैत्य
कोवेष्टा सवदेवता हरु आकुदुःखर विषता पायको भनपस्या ॥ ४ ॥ सूर्य ॥ सूर्यको इंद्रको वायुको चंद्रमाको यमको वरुणको अरु देवता को ज्या के हीः
त्य काज कुरोग न्या महिमा सुरदैले आकु गरिवस्याको ॥ ५ ॥ स्वर्गी ॥ महिमा सुरदै भन्ना दैत्य बडो दुरात्मा हैरहे छ त्यसले सवदेवता हरु लगाया छन पृथि
मामानि सहि न्या है हि छन ॥ ६ ॥ सतह ॥ जो दैत्यको वेष्टा आकुदुःख कहि शक्यत सो शरण भी पनि आइ पुग्छ तस्को जूना तरु वध क्यो ना शकुं छ त्यो वि
चार जानि गर्नु हवस ॥ ७ ॥ अविस्वाच ॥ इत्थं ॥ यस्तो सव ब्रह्मा दि देवता को फेराइ सुनि कन विष्णु को र शिवको हृदयको वडो को प पूर्ण भयिनेत्र भवरी

पारी कुटील मुख गथी ॥ ८ ॥ ततोति ॥ ताहा पक्षि विष्णु का मुख बाट र अहमा का शिव का मुख बाट वडो तेज पुंज को पयुक्त भई निस्कं थ्यो ॥ ९ ॥ अन्येषां ॥
अरु देवता का देह बाट इंद्र का देह बाट वडो तेज पुंज निस्क्यो त्या तेज पुंज को पर्वत यस्तो भव धन लाग्यो ॥ १० ॥ अती ॥ त्यो तेज पर्वत ठेर वध्या को देवता
देष्टुं तज्या लाले दश दिशा व्याप्त भया को रहे छ ॥ ११ ॥ अतुलं ॥ यस्तो तेज पर्वत बाट रुकरा मोर रूप वंत भया की स्त्री उत्पन्न भई तन का स्वरूप ले
तीन लोक व्याप्त भया को रहे छ ॥ यदभू ॥ जो शंभु बाट तेज तन को मुख रूप कुं थ्यो शिर को रों यम का तेज बाट कुं थ्यो विष्णु तेज ले बाट कुं थ्यो ॥ १२ ॥ सौम्य
॥ बुध का तेज बाट दुर्गोटा स्तन कुं थ्यो इंद्र का तेज बाट भुरगी कुं थ्यो वरुण का तेज बाट तिया छाति कुं थ्यो पृथ्वी का तेज बाट नितं व कुं थ्यो ॥ १४ ॥

ब्रह्मण ॥ ब्रह्मकातेजवाट दुइपाउहुं थ्या सूर्यकातेजवाट पादांगुली भईवसुकातेजवाट हातिका अंगुलि भई कुवेरकातेजवाट नासिका दुंधी ॥ १५ ॥
तस्यास्त ॥ प्रजापतिका वाट दानहुं थ्या अग्निका वाट तीन आखा भया दून ॥ १६ ॥ **क्रवौव** ॥ नेत्र क्रव सं ध्या कातेजवाट दुंध्या कर्ण वायुकातेजले दुं
थ्या अरु देव देवता कातेजले समस्त शरीर भरि पूर्ण हुं थ्या ॥ १७ ॥ **ततस्त** ॥ ताहापछि सब देवता कातेजवाट उत्पन्न भया की जो दुर्गा दून तन को स्व रू
प देखि कन महिष दैत्य ले तर्सीया का सब देवता हरु टरे हर्य कन प्राप्त हुं थ्या ॥ १८ ॥ ततो देवा दुस्त स्ये त्या निस्थान्या युधानिव ॥ **शूलं भू** ॥ ताहापछि
ति दुर्गा कन सब देवता आक्रा २ आयु धदि थ्यो. विना क धु क भना महा देव ले वि शूल हात मा दि न्या भया ॥ १९ ॥ **वक्रं व** ॥ त्य सहर्गा कन य क्र जो आ

यु भद्र त्यो कृष्ण देवता दि थ्यो. वरुण देवता ले शंख हात मा दियो. अग्निले वट्टि हात मा दियो ॥ २० ॥ **मारुतो** ॥ वायु देवता धनुष हात मा दि थ्यो ॥ वारा
ले पूर्ण भया को तूनापनि दि थ्यो. इंद्र देवता ले वज्र आयु ध हात मा दियो ॥ २१ ॥ **द्वेदो** ॥ सहस्राक्ष जो दू त्यो सरावत हातिका गला वाट निका लिघं
टा दि थ्या ॥ यम ले काल दंड वाट दण्ड दि थ्या. अंबुपनि भन्ना वरुण ले पाश दि थ्या ॥ २२ ॥ **प्रजाप** ॥ प्रजापति देव ले रुद्राक्ष को माला दियो. ब्रह्म ले कम
ण्डल हात मा दियो समस्त कृपा ज निरोम का ज उद्धृत त्या सूर्य देवता त्रै ओते ज दि थ्या ॥ २३ ॥ **काल** ॥ काल ले तरवार डाल हात मा दियो ॥ २४ ॥ **क्षीरोद** ॥
दधिसमुद्र ले गाला माला उ न्या मोटि को माला रन या हेर लुगा दि न्या भयो ॥ मस्तक माला उ न्या चूडामणि पनि दि गो. हात मा कात मा सुन चुरा दि न्या

भयो ॥ २४ ॥ अर्द्धचंद्र ॥ कपालमाला उन्नत कन अर्द्धचंद्रमाभयो शुभ्रध्वरी को हांत समस्त हातमाला उन्नत वेस २ गहनाभयो ॥ २५ ॥ अंगुली ॥ अंगुलीमाला उन्नत तमोवाला अंगुली दूद समुद्रले दियो बिम्बकर्मावडोकाटगर्नीला उन्नत रोदिन्याभयो ॥ २६ ॥ अस्त्रान्ये ॥ अनेकरूपका हतियारभया अभेद्यनिश उभयो दिन्याभयो कमलाकुलमाला अम्लानभयाको समस्त देहभरी पूर्ण दुन्याजसले रदह ॥ २७ ॥ अदर ॥ जलसमुद्रले यतिधकदियो हातमारा अन्या एक फूल कमल कोपनि दियो हिमालयले अस्वारी गर्न कनसिंह दियो अनेकतरह कारत्वपनि दियो ॥ २८ ॥ दहाव ॥ कुवेरले मदका कुंदोभ रिमद दिन्याभयो शेषनागले महामणिशोभितभयाको नागकोमाला दिन्याभयो ॥ २९ ॥ नाग ॥ जो शेषनागले यत्रोपृथीध्याको उरतिथो कदियो

अरुदेवता हरुले अनेकतरह कागहना हतियार दी कन ॥ ३० ॥ संमा ॥ बडोसंमानगदी दुर्गापनि बडो अष्टाष्टहासशवुकनवारवारगर्नीभयी तनकावडा शवुले समस्त आकाशभरी पूर्ण दुंथो गरे ॥ ३१ ॥ अमाया ॥ त्वस्तोत्यो शवुकहीपनि न अटाउन्या त्वसले वडो प्रतिहत शवु दुंथो त्वसैशवुले चौढलोकर सातस मुडका मूनलाग्याथो ॥ ३२ ॥ वज्राल ॥ वसुधापृथ्वी कनधामनसवपर्वतपनिकामथ्या त्वसवे लामा देवता हरु जयशवुक हथ्या आपस्तमादेर खुसी भयाहुन ॥ ३३ ॥ तुमुबु ॥ सबजतिभयाका मखी श्वरभक्ति लेन प्रित शिरभद्रस्तुतिगर्थी समस्त लोककामथ्या अमरारिपनि तर्सथ्या ॥ ३४ ॥ सन्नडा ॥ तहापद्धि जतिभयाः कोदेत्यका सदीरलस्करधिया लडा दुर्गर्नीको इहगर्नी अरेयो उत्पातका हावाटभयो भनिमहिवा सुरदेत्यगर्जनगर्थी ॥ ३५ ॥ अभयधा ॥ ताहापद्धि त्यो म

हिवा सुरदैत्य तसे शवृषद्विवाट जदि भयाको फोड संगली दगुर्वा भयो तहागड देव छत तनका दर्शन लेती नलोक या त भया कार ह्या हुन ॥ ३६ ॥ पा
दा ॥ पादको ते जले पातल व्याप्त दुःखो मुकुटका का तिले दशादिशा व्याप्त दुःखो धनुषकाटां कारले दशादिशा अभिषा न भयाको र हो छ ॥ ३७ ॥ दि
शो ॥ हजार हात ले दशादिशा व्याप्त गन्याको र हो छ यस्तो दुर्गाको हथा हा रूप देविक नवडो को पशुक्त भइ कनमहिवा सुरदैत्यको मनमाल डाई गनी को र
हुग हो ॥ ३८ ॥ शस्त्रास्त्रे ॥ शस्त्र अस्त्र को धेर वर्या गरिक नदिशा शव ते जले पूर्ण भयाको र हो छ तहापदिमहिवा सुरदैत्यको सही र बिष्णु धरनामा दे
त्य अघिस रिल दुःखो ॥ ३९ ॥ असु ॥ दशय अयुत फोदली वा कर दैत्य लडाइ गर्थो अयुत फोडली रथवानली उदग्रनामा दैत्य लडाइ गर्थो ॥ ४० ॥ अ

मुख ॥ महाहनुनामा दैत्य ले हजार अयुत फोडली कन पाव हजार अयुत असिलोमा दैत्य लडाइ गर्थो ॥ ४१ ॥ युयुधे ॥ वामर दैत्य वतुरंग फोदली लड्यो
हाथी घोरा हजार २ फोडली भने कार तर हुका फोदली न ३ न्या भयो ॥ ४२ ॥ बृतो ॥ कोटि रथली कन आई बडो बल युक्त भइ दुर्गा संग लड्यो विडाल दै
त्य पंचास निबुत संगली लडाइ गर्थो ॥ ४३ ॥ युयुधे ॥ अरु जो दैत्य का लत्कर छुंति सवल दाइ को सराजाम संयुक्त सित अयुत हजार २ हाति घोरा यु
क्त ब्यूह गरिल दुःखो ॥ ४४ ॥ युयुधे ॥ तहापदि वडा २ बल वंत जो दैत्य छुंति अक्र २ फोदली बल युद्ध युक्त कोटि २ हाती घोडाली कन ॥ ४५ ॥ हयानो ॥
घोरा माव ५० का भसुवारली कनमहिवा सुरदैत्यमा ५० माव सथ्यो तो मरा भिगुपाल वछीर मुराल जो आयुध छ त्यस ले ॥ ४६ ॥ युयुधे ॥ दैत्य

हनु दुर्गीसंगलडा इमाको ईतरवारको ईवनचराको ईपट्टी राहति यारखलाउ न्याको ईवह्विलाउ न्याको ईपासफेक न्या भइल दुन्या ॥ ४७ ॥ देवी ख ॥
दुर्गीकन आजहामी नहानी हो दुन्या हो न भन्या दैत्यवडोको पगरी अनेक हतियारखलाउ न्या वरिदु काले जन्ति आकु माथि आ इपे न्या काहति यारहे
कटेगथीन ॥ ४८ ॥ लीले ॥ दुर्गीले दैत्यका हतियार आकु अस्त्र शस्त्र वर्याले आछा दितगथीन वहु तंतरह सित त्यसवेला मा देवता स्तुतिगथी
॥ ५० ॥ मुनो ॥ ईश्वरी जो भगवती छ नृतिनिले पनि दैत्यका देहमा राख्छ अस्त्रहो दन्या भईत्यो दुर्गीको बाहनको सिंह जो त्यो पनि शरीरको रौं घडा गरी
कोपगथी ॥ ५१ ॥ यवारा ॥ त्यो सिंह दैत्यको फोड महादुर्ग्यो यैस्तो वनमा अग्नि जलयाका तले फोड जलन्या भयो दुर्गीका मुखबाट जन्ति फेरा बाः

अनिक थ्यो जन्ति फेरा युद्धका समूहमा ॥ ५२ ॥ तख ॥ कोहि हजार दुर्गीगगज न्मदा तनले भिंडि पालर वंचरो तरवार पट्टि आ सुधले ॥ ५३ ॥ नाशय ॥ दै
त्यको फोड सत्यानाश गर्नी दुर्गी सामर्थले वडो युद्ध गर्नी पटह जो नगरावाज न्या शंखको बाद्य गर्नी कोहि दैत्य भय गर्नी भया ॥ ५४ ॥ मृदंगा ॥ कोहि मृदं
गवाज न्या त्यस युद्ध उत्सवमा वडो तमा साहु थ्यो ॥ तहापट्टि शूलले गडाले वार वर्याले ॥ ५५ ॥ खक्रादि ॥ खक्रा जो तरवार दैत्यमा थिसंय संख्या खल न्या
कोही दैत्य दंदाखनले विमोहित गरी नासकन प्राप्तुं थ्या ॥ ५६ ॥ असुरा ॥ कोहि दैत्य डोरिले बाधिकन यताउता लडाउ थ्या कोहि दैत्य लाउती श्वातरवा
रले मार्या यस्ता तरह दैत्य फोडको ॥ ५७ ॥ विषोधि ॥ कोहि दैत्यमा थि गदाको निपात नगरी भैमा सुताउ न्या कोहि दैत्य लाई सुशालले तोदित गरी

रगतकोनदीवहाउंथो ॥५८॥ केविनि ॥ कोहिदेत्यकाहृदयमा. त्रिभूललेहानिकनभैमालोतिमर्थानिरंतरवाणवर्षीलेरणभूमिमासुतन्याहुंथ्या ॥५९॥
॥सेनानु॥ सेनपक्षिलेकसैकाप्राणउठाईअकाशमालेजाथ्या. कसैकाहातनाहीकसैकाग्रीवनाही. कोहिवडासोरलेवहिराभूमिमर्थ्या ॥६०॥ शिरांसि ॥
कसैकाशिरनाहिकसैकामध्यनाहीहिकसैकाजंघानाहिकोहिभैमापरिलोदुन्याभईमर्थ्या ॥६१॥ सक ॥ कोहिदेत्यकाहातनाहीकसैकाआखानाहि
कोहिद्विखंडगन्याकाजोदेत्यद्वयोशिरकात्पाकापनिफैस्त्रिधिकनलडुंथ्या ॥६२॥ कबंधा ॥ कबंधजोशिरनभयाकादेत्यद्वतिखंडतरवारहातली.
परमआयुधलेयुक्तवडोमुदसोरलेवहिराकनवाधनसकन्याजोकबंधछन. बछीहातमालीलडुन्याभयो ॥६३॥ तिष्ठति ॥ तिष्ठईतिघडाभईलडनुप

ईभनिवडोसोरगरीकोहिदेत्यदुगुन्या ॥ त्यसलडाईकाघोराहातिरथहानिकनरगतकोनदीजस्तोवह्याकीअथाहानदीकोहीत्यसनदीकननसक
न्याहुंथ्या ॥६४॥ अग ॥ रगतकोनदीअगम्यकोहितरननसकन्याजगा२सावहन्याभयो ॥६५॥ मध्येया ॥ देत्यसेनाकामध्येमहातीघोराजनि
भयाकासकक्षणमानसकनजापगर्थ्या. जस्तोआगालेदारुवाघासकननासगई. तसैदेत्यकननाशगर्थ्या ॥६६॥ निम्नेया ॥ आगालेघा
सरदारुवाजलायाजस्तोफौजनासिंदा. सिंहपनिवडोनादबादुकनगरी. आक्राइहकोरोखडागरीदेत्यकाप्राणकोमोक्षगन्याभयो ॥६७॥
देवगरी ॥ दुर्गकोजोगनछनतनुलेयुद्धमादेत्यहृकासमूहकोविनाशगर्थ्या ॥ तहापछिदेवताजसिभयाकादुर्गकोस्ततिगन्याभयोअका

शवाट पुष्पवृद्धिगर्था ॥ ६० ॥ ॥ इति माकुरेयपुराणे ॥ २ ॥ भविरुवाच ॥ निहन्य ॥ मेधानामभविभङ्गन निहन्यमानक्याहानिसक्याको आयुः
जो डेदेविकन रुक विधुरनामा देत्यं विकामाधिकोपगरी लडाईगर्न कन उदथ्यो ॥ १ ॥ सदेवी ॥ त्यो विधुरनामा देत्यं वाणको वकी लेलडाईगर्था
जस्तो सुवर्गावलमावर्वाले अभियो सङ्गुह्यस्तो वाणवकीगर्था ॥ २ ॥ तस्य हि ॥ दुर्गा लेत सदेत्यको वाण समूहवृद्ध्या हाथी रघोरा सारथिको
नाशगर्था ॥ ३ ॥ विह्व ॥ तसको धनुपनिपटाकापनि स्कावाणले काटी फालथी धनुकाद्याको जो विधुरदेत्यहृत्पोफेरिपनि दुर्गाको देहमा
काणले पीडागर्था भयो ॥ ४ ॥ स हि ॥ धनुनभयाको रथनभयाको चोरानभयाको सारथी नभयाको सब काटी फाल्याकार ह्य ह्यन उस्तापनि दुर्गा

हान्नकनगरतरवारहातमालीकनदगुर्था ॥ ५ ॥ सिंह ॥ त्यसदेत्यलेती तरवारले सिंहका कपालमाहानी कन दुर्गाका हातमा हाथ्यो वडो दे
गसितवलन्या ॥ ६ ॥ तस्याः ॥ हे नृप नन्दन सुरथराजा हो देत्यले हान्याको तरवार हातमा पुगन मोत्रे भैमापथ्येति हापहि विश्रुल हातमालीक
नलाललाल आरवागरीकोपगरी रहन्या भयो ॥ ७ ॥ विह्व ॥ भद्रकालीमाथित्यो देत्यो श्रुल हान्या जाज्वल्यमान आकाशवाट ह्यर्थ विवपयाः
जो दुर्गा माथिपथ्ये ॥ ८ ॥ दह ॥ त्यो देत्यले पठायोको श्रुल आयु माथि जाइपन्याको देछडा दुर्गापनि श्रुल आयु भत्यसमाथि सुचाउन्या भयो
॥ त्यो दुर्गाको श्रुलले देत्य श्रुलपनि काटिन्या देत्यपनि काटिन्या भयो ॥ ९ ॥ हतेत ॥ महावीर्य जो विधुरनामा देत्यहृत्पोमन्यापहि हातीमाच

चै. भा.
१६

धिक नवामरदेत्यदेवताहरलाईतसीउन्यादुर्गीमाधिदगुरिआउन्याभयो॥१०॥**सोपि**॥ तोदेत्यपनिवह्निअं विकामाधियलाउन्याभयोति
नलेडुकारगनेमात्रेभेमानिप्रभईपथी॥११॥**भयो**॥ तोवह्निभेमापन्याकोदेधिकनवडोकोधलेपूरीभईकनवामरदेत्यलेमान्याकोवह्नि
निदुर्गीकाटिकालन्याभयो॥१२॥**ततो**॥**सि**॥ तहापहिसिंहलेहातिकागंडस्थलमावसिचामरदेत्यसंगमुडगरीलडुथोदेवताहरुकोशत्रुजो
वामरदेत्यकवाधन्यादोलगथी॥१३॥**युधामा**॥ सिंहकोरवामरदेत्यकोयुद्धडुडाहातीदेविभेमाउत्तीकनदुजनावडोवलसितअतिदारु
राजोप्रहारमारण्यस्तागर्यादुथ्यापृथ्वीमाचामरदेत्यकोरसिंहकोवडोयुद्धतमासाभयो॥१४॥**ततो**॥ तहापहिवडोवेगलेआकाश

१६

मागईसिंहलेवामरदेत्यकोशिरकाटीफालिकनभेमापथी॥१५॥**उदय**॥ उदयनामोदेत्यकरालनामोदेत्यशिलारवृक्षदातरमुदिहतइलालेदुर्गी
जोभगवतीहदुइदेत्यकोविनाशगन्याभयो॥१६॥**देवीकु**॥ देवीजोकुधन्यापहियुद्धतजोवाकलनामदेत्यछतसुलाइगदालेमादीभइनेअं
धकनामदेत्यकनभिंडिपालरवाणवर्षामाथीन॥१७॥**उग्राम**॥ परमेश्वरीजोदुर्गीछनतिवदोउग्रवीर्यहृत्यसुलाइमहानुदेत्यलाईत्रिशूलअ
युधलेमारीसुताउन्याभइने॥१८॥**विडाल**॥ विडालनामदेत्यकोतरवारलेदेहकामध्येमाकाटीसुताउन्याभयीदुईरनामदेत्यकोरदुर्मुखवना
मदेत्यकोवाणलेशिरकाटीफालन्याभइने॥१९॥**स्वंसं**॥ रस्तातरहलेआफ्नाफोजकोनाशभयाकोदेष्टदासदीरपनिलस्करपनिना

राकनवातभयाकोदेहीमाहिजोवडा रांगाकोरूपगरी कनदुर्गागिरालाई तर्साउन्या भयो ॥२०॥ काश्चिन्तं ॥ त्यो रागाका रूप भई कनमहिष
नामदेत्यकसैलाई मुखले मान्यो कसैलाई मुखले मान्यो कसैलाई पुछरले कसैलाई तिङ्गले मान्यो भई ॥२१॥ विमोचन ॥ कोही दुर्गागिरालाई बडो सो
रगरी कसैलाई यताउता दगुदीवेगले कसैलाई मुखवाट निस्क्यो को वायुले मारी कनभैसापान्यो भयो ॥२२॥ निपत्य ॥ त्यो महिषदेत्यले दुर्गागिरा
काफेदमासदीर २ पनिमारी कनयताउता दवरी कनदुर्गाको जो सिंह छ तसको ना शगरी को ईछागनी शवृगर्थी अं विकापनिकोपगर्थी ॥२३॥
॥ सोपिको ॥ त्यो महिषासुरदेत्य क्रोधले खुर भैमा लाई छन्यासिडले वडा २ पर्वत कन फाल्यो शवृपनिगर्थी ना उपनिगर्थी भयो ॥२४॥ बिमो

॥ महिषासुरदेत्यको वेगले विक्षणा भयाकी जो पृथ्वी छ त्यो शी रीं छुंथ्यो पुछरका सोरले समुद्रला वित सवजगा वाट छुंथ्यो ॥२५॥ धुतभृ ॥ सिङ्ग का यता
उता गनी लेमेषमेष पनिरवड छुंथ्यो देत्यका मुखवाट निस्क्यो का वायुले पर्वत पनि शयखंड भई भैसापर्थी ॥२६॥ इतिको ॥ सस्ता तरहसितः
क्रोधले संयुक्त भई कन आक्रमाथि उआई पन्याको त्यो महिषासुरना देत्य कन देवदातस्का वधको जो उद्योग गर्थी न ॥२७॥ साक्षिना ॥ त्यस
महिषासुरदेत्यमाथि डोरी पृथार्थवांधन कन नयार छुंथ्यो जसै बाधन्या डोरी आक्रमाथि उआई पन्याको देवदामहिषासुरदेत्यले रागाको हो
उन्या भयो ॥२८॥ ततमि ॥ जसै मानिसको रूप छोडी सिंहको रूप गर्थी त्यसको पनि वरिड काले शिरकाटन तयो र भयो पछि उसवेला माना नि

चं भा.
१८

सकोरूपगरीधारतरवारलीदेवनामाआउंथ्यो॥२१॥**ततः**॥दुर्गालेत्योपुरुषस्वरूपआइपयाकोदेवनमोत्रैयागवर्गीगरीत्योपुरुषदैत्यपु
रुषकाटिन्याभईठालपनितरवारपनिहोडिकनत्योदैत्यवनहातीभइजांथ्यो॥२०॥**करेग**॥त्योवनहातीसुडलेसिंहकनपक्रनतयारहुंथ्योगर्जन
ग ३ पनिकुंथ्योत्योसुडलेसिंहकनसमात्याकोदेवडादुर्गालेतरवारलेहातिसुडपनिकादथ्यो॥२१॥**ततोम**॥तहापछिमहिषासुरदैत्यकोरूपगरीतिन
लोकचराचरज्याकेहीभयाकासवक्षोभितहुंथ्यो॥२२॥**ततः**॥तहापछिजगन्नाताजोचरिदिकाछुनतिवहाक्रोधगरीकनजोमडिरापानेछु
त्योपीन्याभई॥२३॥**ननई**॥वललेवीर्यलेमदलेउद्धतभयाकोमहिषदैत्यजोहृत्योसिंडलेपर्वतल्याईचरिदिकामाधिफालथ्यो॥२४॥**साचता**॥

१८

देवुवाच॥गर्ज॥दुर्गाकहंथीनअरेमहिषदैत्यहोअलिकशरणगर्जनगन्यासजहासंसमधुयानगहुंताहासंमगर्जनगन्यासमइलेतलाईमायापीछे
देवतागर्जनगन्याछुन॥२५॥**अभिरुवाच**॥स्वमु॥मेधाभविभइनरस्तोसुनिकनदुर्गालेमहिषासुरदैत्यकापीठमापाउराभिकंठमाभूललेताडि
तगर्थी॥२६॥**ततः**॥तहापछिदुर्गाकापाउलेपीठमावाप्याकोजोमहिषासुरदैत्यकोकंठमाभूलहान्नमोत्रैआभानिस्कनमोत्रैजवापसालगर्न
तयारहुंथ्यो॥२७॥**अर्द्धनिः**॥आधानिस्क्याकोदैत्यदुर्गासंगलडन्याभयोत्योमहिषासुरदैत्यबडोमुद्धगन्यातहापछितरवारलेदैत्यकोशिरका
टीफालथी॥२८॥**ततोहा**॥तहापछिदैत्यकोकोदमाहाहाकारशब्दगरीदैत्यसेनाकोनाशभयोभनिदेवतागयाछुतिपरमहर्षकनवापहुं
जो १

॥ ४० ॥ तुल्य ॥ सुरजो देवता हूँ तौ नै हरु धेरै स्तुति गथी आबि हरु पीने स्तुति गथी गंधर्व हरु गायन गथी अप्सरा हरु नायन गथी भई ॥ ४१ ॥
॥ इति मार्कण्डेय पुराणे ॥ ३ ॥ राकादयः ॥ मेधा आबि श्वर सुरथरा जाहु उभं हरु राकादि जो देवता हूँ नति भति वीर्य धेरि पुराक्रमी महिमा सुर
नाम देत्य कनमाया को देख्या पछि देवता को शत्रु मन्था पछि दुर्गा कन प्रणतिले नम्र शिर गरिके नै हर्ष जुक्त जो बाका हूँ तन लेव डोह
पूर्व कस्तुति गथी ॥ १ ॥ देव्याय ॥ जिन ले आत्म शक्तिले जो संसार रचे हूँ विस्तार पति गरे हूँ निःशेष समस्त जो देव गरा मूर्ति आकु भ
ई कन जो कल्याण ग ॥ न्या को हूँ तन कन अं विका जो रूप हूँ अखिल संपूर्ण जो देवता हूँ महर्षि हूँ तन ले पूज्य हूँ तन कन भक्ति ले नम

स्कार गछी तिह झोक ल्या रागर ॥ २ ॥ यस्याः ॥ जिन को प्रभाव अतुल हूँ जस्को वर्णन गर्न कन विष्णु ब्रह्मा महा देव को बल लो गे नति
चण्डिका आखिल जगत परिपालन गन्या हवन देत्य भय को विना राग न्या आकु भयी रहु न यस्तो बुद्धि पति गरु न ॥ ३ ॥ माग्री ॥
जो दुर्गा धर्म वतमानि सुकायरमा श्री लक्ष्मी स्वरूप लेव स्या की पापात्मा कायरमा अलक्ष्मी रूप हूँ यस्ता तरु का तिन का स्वरूप
कृत धी जो हूँ तन का हृदय मा बुद्धि रूप हूँ साधु का हृदय मा आद्या रूप हूँ कुल जन को हृदय मा लज्जा रूप हूँ यस्ता दुर्गा कन हा
मिन प्रित भया का हूँ हे देवी तिमिल विश्व को पतिपालन गन्या स ॥ ४ ॥ किंवर्ण ॥ हे देवी यस्तो तमो रूप को वर्ण नाहामिले कहा ग

रिस की हू अखित्य रूपति मिहो असुर जो दान व हंत न को केवल क्षय रूप हू ॥ किंचित आहव युद्धमा रस्तात मा जो अद्भुत जो चरि
त्र हून असुर देव गणादि स्वपमा हा ॥ ५ ॥ **हेतुः** ॥ समस्त को जगत्संसार को त्रिगुण हेतु अपार जोति मिहो तमो था हा विष्णु लेशि
बले कसे लेप निपाये नति मि सर्वा श्रय रूप हू ॥ अखिल समस्त जो जगत्संसार हू त्यो तमो अंश भूत हू तिमि अव्याकृत आ
द्य परम प्रकृति आ फु हू ॥ ६ ॥ **यस्याः** ॥ जनका स्वाहा हवन मात्र शब्द कथन ले समस्त जज्ञ मा सब जनि भया को देवता तृप्तिक न प्राप्ति
कुं थ्या हे देवि पितृ जज्ञ मा स्वधा शब्द कथन ले पितृ का गण तृप्तिक न प्राप्ति कुं थ्या हू ॥ ७ ॥ **यामुक्ति** ॥ अखित्य महा प्रजा जोति मिहो तमो

इंद्रिय को निय हग दीयो मानि स ले मोक्ष पद प्राप्त होला ॥ मुक्ति को हेतु पति मिहो यस्तो नाश कन प्राप्त गन्या को जिन ले समस्त दोष रह हू
स्ता अविश्वर का हृदय मा विद्या स्वरूपति मिहो ॥ ८ ॥ **शब्दामि** ॥ हे देवी तिमि शब्द त्मा हू विमल जो अग्ने द्य जुर्वे द मानि धान हू रा जो
पद संयुक्त जो पाठ हू त्यो साम वेदी ग हू न हे देवी तिमि त्रयी मूर्ति र ह्या की हू भव संसार मा भावना जो हू शक्ति त्पस्का उत्पादक आफै हू भ
जन गन्या दुनि आ को कष्ट नाश न्या हू ॥ ९ ॥ **मध्यासि** ॥ हे देवी तिमि कस्ता अखिल शास्त्र को सार जान्न कन आ फु मेधा स्वरूप हू (दुर्ग जो कः
थिन भव का संसार समुद्र त नीला रूना उजस्ता हू श्री जो लक्ष्मी कार विष्णु का हृदय मा निवास गन्या आफै हू शिव ले प्रति कृत आ फु हू ॥

ईषत् ॥ अलिक निर्मलजो पूर्णिमा को बंधु तसो जो मुख नमो सुवर्ण वाहिपनि धेर राओ अति अद्भुत जो तमो मुख छ तयो देख दो देख देव डोको
धले पूर्ण भूमिक न युद्ध गथो ॥ ११ ॥ **दृष्ट** ॥ उतिराओ तमो जो मुख छ तयो आधामा भवरी पारी कनत पाई ले देख नमात्र महि बा सुर देख्यो खणः
होइ न्याभयेन तयो वडो आर्य श्रेर हे छ क्यो अर्थ तमो को पयुक्त दर्शन ले को वाचन सकला ॥ १२ ॥ **देखि** ॥ हे देविति निघु सन भया संसार माधि
याडो को पले देख्यो कुल को विनाश कओ फे हो ॥ यत्रो वडो महि बा सुर देख्यो को फे इजति भया को तपाइ ले नो शकन प्राप्ति गरे छ ॥ १३ ॥ **ने संम**
हे दुर्गेय संसार मा जन पद न्या को जो मानि सहति धन्य हुन ॥ तन काज शपनि तुलो धन पनि त सधेर छ तन का बंधु वर्ग पनि के ले सी दित ॥ १४ ॥

हे न धन्य पनि तिनै छ न स्वसनी र होरा नाति परियार तुलो तन का छ जिन्मा धिति मिले वरु पा पूर्व कय संन डं हो ॥ १४ ॥ **धर्म्याणि** ॥ हे दुर्गे सु
कति जो पुण्या त्मा छ तयो वधिया विधि पूर्व क कर्म पनि गर्छ न धर्म पनि गर्छ न नित्य कर्म उन्नमग न्या जो छ न तयो स्वर्ग मा तमो प्रसाद ले जां छ
न समस्त लोक को सुख पदार्थ हुं छ ॥ १५ ॥ **दुर्ग स्मृ** ॥ हे दुर्गे तमो स्मरण भया मा अशेष जति भया काज तु प्राणिको दुःख पनि नासिं छ सावधा
न राओ गरितमो समरुना गन्या पछि अति राओ मति क्यो बुद्धि वध्या वन्या हो दारिद्र्य को रहु रव को विनाश ति मि वाहि अर्को को हिपनि छैन सच
को उपकार गहं लाभ निसव काल मा आर्द्र चित्त रखा हो ॥ १६ ॥ **स्मिर्ह** ॥ इदेत्य हर को समूह नाश गन्या पछि जगत् संसार समस्त सुख न प्राप्ति

३२
१ हे देवी तपाइले देवनमात्रे
भयेछ ॥ इंदैत्यले संग्रामका भूमि पाई कनति मिले स्वर्गमा पुन्याउनु भयेछ ॥ १० ॥ दृष्टे वों ॥ दैत्यको विनाश भयि जान्या हो वरानितुल्य दुन्या हो ॥
इन्काला गिहति यार चल्याउ न्या पनि हायं नतर शत्रुको पनि नाश गन्याको हतियारले यस अर्थ लोकि हतियारले इपवित्र भयी जाउ न स्वर्ग
लोकमा प्राप्ति न्याछ भनितरवारले हान्याको हो ॥ ११ ॥ स्वप्न ॥ हे दुर्गे इंदैत्य हरुले तत्रांतरवारको जो तेज हतियो देवि शूलको अति उत्तम ॥
जो कांति छ त्यो देवनमात्रे नाशक नत्राति दुन्या हो तरतत्रो अति रात्रो स्वरूप ॥ पनि देखा ले जो मर्त्या हो ॥ १२ ॥ दुर्जन ॥ हे देवि योति मिले ती न
लोकको शत्रु लडाई मा विनाश गरी समस्त रक्षित गरे हरिषु जो शत्रु हमा छति दूर गन्याछ हमा भय पनि दूर गन्या छोति मिशत्रुको नाश ग

१५
२२
१५
२२

॥ दुर्जन ॥ हे देवि तत्रो शीलकस्तो भन्या दुष्ट वृत्तको विनाशक छो ॥ रूपकस्तो भन्या अविविध विंत्तनागरी नसकनु छ ॥ बलकस्तो भन्या सवजंति भयाका देव
ताको पराक्रम महानिक नवस्याको जो मही देत्य हतियार समापनि दयामात्र प्रकट गन्या छो ॥ २० ॥ केनोप ॥ हे देवि तत्रो जो अथाहा रूपको उपमाको
वर्णन गर्नु सकला रूपकस्तो शत्रुको विनाश गन्या विजितमा सेव्याणि भाषित भयो दयाछ ॥ लडाई मा सवै माधि निरुभाव तत्रो छ ती नलो क
माति मिवा हि वरदान गन्या अको छैन ॥ २१ ॥ त्रैलोक्य ॥ अथाभाखा ॥ दुर्जन सत्ता ॥ २२ ॥ शूल नपा ॥ हे देवि ति मिशूलले हमा रक्षा गः
न्या स्वप्नले रक्षा गन्या हे अं वि के घंटा स्वनले हमा रक्षा गर ॥ पाप भनु मत्वनले हमा रक्षा गर ॥ २३ ॥ पाप ॥ पूर्व पश्चिम दक्षिण उत्त

रदिशा आयु विशूलले प्रामितगरी कनवारंवार रक्षागरे हे ईश्वर ॥ २५ ॥ सोम्यानि ॥ हे ईश्वरी जो तमा सोम्यरूप छं तिनले तीन लोक मा
जोरमित छं जो तमा अति घोररूप छं तिनले ह मो सर्व प्रकार सिती रक्षागयास ॥ २६ ॥ स्वप्नशू ॥ स्वप्नतरवार भयोगदा भई इत्यादितः
प्राशस्त्र छं नतनले हे अं विके कर जो हात आं गुलिमा संलग्न भयाका छुन तनले सर्व ठा उवाटर रक्षागया ॥ २७ ॥ अभिरुवाच ॥ स
वंत्त ॥ मे भ्रा अभिरुवाच छुन यस्ता तर हसित देवता हरु लेवहु ते स्तुति गथ्या नन्दनवन का पूरुल हरु लेवहु ते तर हसित पूजा गथ्या
वधियाच ननले लेपनादि पूजा गथ्या ॥ २८ ॥ भक्त्यास ॥ त्रिदश जो देवता छं तिनले भक्ति पूर्वक पूजित धूपित गथ्या की जो दुर्गा छुनः

तिनमित भयाका देवता हरु हे उद्युति भक्त नवाका कहं थी ॥ २९ ॥ देवुवाच ॥ विष्णुपतां ॥ हे देवता हे ज्योत मो कां शा भया को सो हा मि छे उमा
ग. त्योवर दिंदु जोति मिले गथ्या का सो त्रले मयु से भयाका छु ॥ ३० ॥ कर्तव्यमपरां यदुकारं तन्निवेदतां ॥ देवा उचुः ॥ भगव ॥ फेरिति मि
हरु लेगर्न न संक्या को कर्तव्यका छु सो भन भन मा त्रै देवता भं छुन हे भगवती हा मिला इति मिले सब काम पुरो गरे छु ॥ ३१ ॥ यदयं ॥ जोः
हमो शत्रु महिषासुर जनि मारि दिया होत काम पुग्यो अजप निदिना को इच्छा भया हे ईश्वरी ॥ ३२ ॥ सस्मृता ॥ जून विला मा हा मिला इके हि
दिपदा आठ पुगला त्यो दूर जावस जो मानिस त मो जो पाठ लेगला ॥ ३३ ॥ तस्मिन् ॥ तस्का धन विभव संपदा को बहु ते वृद्धि हवस ॥

हे अंगिकेति मिहामिमाथि सर्वदा प्रसन्न भया ॥ २४ ॥ ॥ **अविहवाच** ॥ इति प्रसा ॥ हेराजा हो भनि मेधा अधि भद्वन एस्ता तरह संग देवता
हरले रामो गरी दुर्गा को वहुते स्तुति गन्या थ्या संसार कालागी आपना निमित्त पनि मन कांछा पुरा इदि उला भनी दुर्गा अंतर्धान भइनु ॥
॥ २४ ॥ **इत्येतत्** ॥ हे भूपसुरथराजा हो केरि देवता का देह बाट जूना तरह सित भेर पईदा भईनु सो कहहु ॥ २५ ॥ पुनश्च ॥ केरि पनिति दुर्गा
गौरी का देह बाट निस्कि कनज स्ता तरह सित दुष्ट दैत्य को विनाशर शुभनि शुभ को वध गथनि ॥ २६ ॥ **रक्षणा** ॥ लोक को रक्षा गथि
न देवता को उपकार गथि न त्यो विस्तार म कहहु हेराजा हो ते ले विन मारा खि सुन ॥ २७ ॥ ॥ **इति मार्कण्डेय पुराणे** ॥ ४ ॥

॥ **अविहवाच** ॥ पुनश्च ॥ मेधानाम अधिसुरथराजा देउक हंछन पेले एक कल्यमा शुभनि भरा जाले इंदु को यज्ञ भाग ज्या भया को न दव
ल का आश्रय ले सब हरण गथी ॥ १ ॥ **तावेव** ॥ तिहु दुइ जना दैत्य ले सूर्य को इत्य को यम को कुवेर को वरुण को ज्या केहि गन्या काज कुरो
ओफे गथी ॥ २ ॥ **तावेव यवन** ॥ इहु इजना दैत्य ले वायु को अग्निको गन्या काज अरु देवता हरु को काज सब आपु गथी तहा पदिरा ज्य
ले भू भया का सब देवता हर भाग थ्या ॥ ३ ॥ **हताधि** ॥ सब जति भया को अधिकार होइ वस्या काज देवता हरु इति मिह रुले अ
पराजिता जो भगवती छन तन को स्मरण गन्या भया छन ॥ ४ ॥ **तजामा क** ॥ आपसमा देवता भंछ अरे अधिपनि दुर्गा ले बरदि

याको हज्जना वेला स्मरण गली तसे वेला मात ओआप ति मकार न्याहो भनि ॥ ५ ॥ इति कृत्वा ॥ दुर्गा ले क ह्या का हो भनिय सो मन मा
बितना गरी हिमालय मा गर्ई विष्णु माया को वडु ते त तर हसित स्तुति गर्न कनत यार भया हं ॥ ६ ॥ देवा दुःख ॥ नमो देव्यै ॥ देवता
हस्तु स्तुति गर्ह न हे देवि हे महा देवी हे शिव स्वरूपे हे प्रकृति स्वरूपे हे भद्र स्वरूपे ति मिलाई हा मि निरंतर प्रणाम गर्हो ॥ ७ ॥ रो
धये ॥ हे दुर्गे रौद्र स्वरूप त ओह नित्य स्वरूप त ओह गौरी स्वरूप त ओह धातु स्वरूप त ओह ज्योत्स्ना स्वरूप त ओह वंद्य स्वरूप त
ओह सुख स्वरूप त ओह ॥ तिमिक न प्रणाम ॥ ८ ॥ कल्याण्ये ॥ कल्याण स्वरूप त ओह जो प्रणत ह न तिन दृष्टि रूप त ओह सिद्धि स्वरु
तयवा

५ भूभुत को लक्ष्मी स्वरूप त ओह शर्वाणी ति मिहो ति मिक न प्रणाम ह ॥ ९ ॥ दुर्गाये ॥ दुर्गा स्वरूप अपार स्वरूप सार स्वरूप सर्वकारण स्व
रूप त ओह ख्याति स्वरूप कृष्ण स्वरूप कन निरंतर प्रणाम ह ॥ १० ॥ अतिसौ ॥ अति स्वरूप त ओह जगत्प्रतिष्ठा रूप त ओह देवी त्यक्ता
पक न प्रणाम ह ॥ ११ ॥ या देवी ॥ जो दुर्गा सव प्राणि माधि विष्णु माया भनिक ह्या को ह्यस्ता रूप क न ह मो पंचवार प्रणाम ह ॥ १२ ॥ या
देवी ॥ चेत ॥ जो दुर्गा सव प्राणि माधि चेत ना रूप ह त न क न त्रिवार प्रणाम ह ॥ १३ ॥ या देवी ॥ बुद्धि ॥ जो दुर्गा सव प्राणि माधि बुद्धि रूप
ह त न क न त्रिवार प्रणाम ह ॥ १४ ॥ या देवी ॥ निदा ॥ जो दुर्गा सव प्राणि माधि निदा रूप ह त न क न त्रिवार प्रणाम ह ॥ १५ ॥ या देवी ॥

॥ शुभा ॥ जो देवी सर्वपाणिमाक्षधरूपछतनकनत्रिवारप्रणामछ ॥ १६ ॥ या देवी ॥ छाया ॥ जो दुर्गा सर्वपाणिमाक्षधरूपछ
तनकनत्रिवार ॥ १७ ॥ या देवी ॥ शक्ति ॥ जो दुर्गा सर्वपाणिमाक्षधरूपछतनकनत्रिवार ॥ १८ ॥ या देवी ॥ तृष्णा ॥ जो दुर्गा तृष्णारूप
छतनकनत्रिवार ॥ १९ ॥ या देवी ॥ शान्ति ॥ जो दुर्गा सर्वपाणिमाक्षधरूपछतनकनत्रिवार ॥ २० ॥ या देवी ॥ जाति ॥ जो दुर्गा
सर्वपाणिमाक्षधरूपछतनकनत्रिवार ॥ २१ ॥ या देवी ॥ लज्जा ॥ जो दुर्गा सर्वपाणिमाक्षधरूपछतनकनत्रिवार ॥ २२ ॥ या दे
वी ॥ शान्ति ॥ जो दुर्गा सर्वपाणिमाक्षधरूपछतनकनत्रिवार ॥ २३ ॥ या देवी ॥ अद्या ॥ जो देवी सर्वपाणिमाक्षधरूपछतनक

नत्रिवारप्रणामछ ॥ २४ ॥ या देवी ॥ कान्ति ॥ जो दुर्गा सर्वपाणिमाक्षधरूपछतनकनत्रिवार ॥ २५ ॥ या देवी ॥ लक्ष्मी ॥ जो देवी सर्वपाणिमा
क्षधरूपछतनकनत्रिवार ॥ २६ ॥ या देवी ॥ वृत्ति ॥ जो दुर्गा सर्वपाणिमाक्षधरूपछतनकनत्रिवार ॥ २७ ॥ या देवी ॥ धृति ॥ २८ ॥
या देवी ॥ स्मृति ॥ जो दुर्गा सर्वपाणिमाक्षधरूपछतनकनत्रिवार ॥ २९ ॥ या देवी ॥ दया ॥ जो देवी सर्वपाणिमाक्षधरूपछतनकनत्रि
वार ॥ ३० ॥ या देवी ॥ नृद्धि ॥ जो दुर्गा सर्वपाणिमाक्षधरूपछतनकनत्रिवार ॥ ३१ ॥ या देवी ॥ पुष्टि ॥ ३२ ॥ या देवी ॥ मातृ ॥ जो देवी सर्वपा
णिमाक्षधरूपछतनकनत्रिवार ॥ ३३ ॥ या देवी ॥ शान्ति ॥ जो दुर्गा सर्वपाणिमाक्षधरूपछतनकनत्रिवारप्रणामछ ॥ ३४ ॥

इंद्रियाणां प्रविष्टात्री ॥ इंद्रियको अंधिष्टा त्रिस्वरूप भूत न अभिव्याप्तिरूप हो पाणि भूत रूप अभिव्याप्ति ज्योतिर्मिष्टोतिमिक न प्रणा
मह ॥ ३५ ॥ **वित्यह** ॥ वित्यह रूप ले समस्त जो संसार को अभिव्याप्तिग न्या ज्योतिर्मिष्टोतिमिक न विवार प्रणामह ॥ ३६ ॥ **स्तुता सुरै**
॥ **पूरे** ॥ तमो आराधना देव देवता हरु ले गन्या था फेरि डंड ले धेर दिन संमसे वित गन्या हन यस्ता जो दुर्गा हन तिहा प्रो शुभक
लारी गरीस ॥ शुभ वधाउ न्या आपत्ति का ते न्या हवन ॥ ३७ ॥ **या सांप** ॥ जो दुर्गा सांप तं आज काल उद्धत भया का दैत्य ले संतापित भया
का हा मिले वे सगरी तम स्कार गरीह जो दुर्गा स्मरण मात्र ले एक क्षण मा आपत्ति का दह न भक्ति ले न प्रितु न मात्र तन कः

न प्रणामह ॥ ३८ ॥ **सविस्वात्र** ॥ स्वस्ति ॥ यस्ता तरह सित देवता ले स्तुति गूढ हे सुर थरा जा पार्वती जा हवी मास्त्रा नग नेक न जा
वी ॥ ३९ ॥ **साववी** ॥ त्यो पार्वती कहं थो न हे देवता होति मिले कस्तो स्तुति गूढ भन्न मात्र पार्वती का देह वाट शिव उत्पन्न भई
त्यो कहं थो ॥ ४० ॥ **सात्रमसे** ॥ समस्त देवता कन शुभनि शु शुभ दैत्य ले जित्या पहि लगाया पहि मेरो स्तुति गन्या हो ॥ ४१ ॥
शरीर ॥ शरीर को शवाट पार्वती का जो अंशिका निस्कं थो ॥ तन नाउ समस्त लोमा को शिका भनी गायन होला ॥ ४२ ॥ **तस्यां वि** ॥
त्यो अंशिका जसे पार्वती का देह वाट निस्कं थो उसे वेला मा त्यो पार्वती श्याम वर्ण दुंधी तन को कालिका भनि नाम प्रशं त दुंध्या

हिमाचलमावसत्या भईन ॥४३॥ ततो वि॥ तहापदि अं विका परम रात्रो रूप धारन्या भइनु त्यस्तारात्रो रूप कन शुभका वाकर
वरु मुण्डले देव न्या भयाइनु ॥४४॥ ताभ्यां शुं ॥ इन्द्रजना देत्यले शुं भराजो देउ ग इत्यस्तारात्रो महिमा चरु मुण्डले क ह्याइनु हेरा
जा हो रुकला स्त्री स्वा स्त्री हिमाचल शो भितग न्या भया कीइनु ॥४५॥ निव ताद ॥ हे सुरेश्वर यस्तो रूप उत म औ ज सं म क हि प नि न दे
षा को त्यो रूप जानिक न ते पाइले नि राजा वस ॥४६॥ स्त्री रत्न ॥ यस्तो रात्रो स्त्री रत्न धर परिश्रम गरिक न प नि न दे खि न्या दश दिक्ष
राजिन ले शो भितग या को रहेछ यो रूप देवन मन लाब उ न्या हो ॥४७॥ यानिर ॥ हे शुं भराज हो ती न लोक मा ग जे अग्धा दि आ जे

तथा घरमाइ वैइनु ॥ वस कुरोत भोषा पुरोइनु ॥४८॥ ऐशवतः ॥ इन्द्रकोइ न्या हाती हेरावत नाम ग न्या को हात मात घाइ उइ श्रवना
मघोशर पा रिजात व तल घा चरु ॥४९॥ विमानं ॥ हंस ले युक्त भया को विमान त घा घरमाइ सम स्तर तले संयुक्त जो सिंहासन जस्तो
ब्रह्मा को वस न्या विमान त घाइ ॥५०॥ निहिरे ॥ महा पद्म नाम निधि पनिकु वेर का घर वाट ल्या या को त घाइ कमल को जो मलिनः
न भया को माला त घाइ ॥५१॥ इन्द्रको वरुण को घर को सुत कोइ न त घा घरमाइ प्रजापति का जो रात्रो स्पंद न रथ पनित घा घर छ
॥५२॥ मृत्पौरु ॥ काल का हात मा रत्ना को उत्क्रांति दा ना म व छ त घा हात माइ यरु को पा शत घा भाइ का हात माइ ॥५३॥

॥ निशुभ ॥ निशुभराजाको घरमा ज्याके ही समुद्रवाट निस्काकोरत आरमार सवता ही छ अगिलेतिमिलाई दियाको दुंदे दूत
जारा मालुगातिमिछेउछ ॥ ५४ ॥ **रवदेत्ये** ॥ हे शुभराजा होयस्ता २ वडा २ रत्न त घायरमा छन कल्याणी जो स्त्री रत्नका अर्थ
निमिले लिनु दुंदेन ॥ ५५ ॥ **आधिरुवा** ॥ निशुभेति ॥ मेधा अधि भंदन सत्ता यंडु सुंड को वचन सुनि कनवडा पराक्रमी सुग्रीव दूतला
ई पठाउ न्या भयो ॥ ५६ ॥ **इतिवेति** ॥ हे शुभराजा होयस्ता २ वडा २ रत्न त घायरमा छन कल्याणी जो स्त्री रत्नका अर्थ
आहा आउंछे त्यो मालुगातिमिछेउछ ॥ ५७ ॥ **सतत्र** ॥ एतिराजाका आज्ञा पाई कनपर्वतमा वरपाकी जो दुर्गा छ तहा गई तन संगमधु

नि
रवाक्य सितवाक्य कह्यो ॥ ५८ ॥ **इति** ॥ **देवदेत्ये** ॥ इत कहंछ न हे देवी देवैश्वर जो शुभराजा त्यो तीन लोकका परमेश्वर भयाको छ
तस्को दूतमहु तसो मलाई तिमिछे उपहाय छ ॥ ५९ ॥ **अथाह** ॥ जो शुभराजा वडा छ समस्त देवता माथि जस्को आज्ञा छ तमस्त
जति भयाको दैत्य अर्को विनाश गरी वरपाको छ तसले ज्या कहंछ्यो सो सुन ॥ ६० ॥ **ममेव** ॥ मेरो वरमा अखिल समस्त तीन
लोक छ देवता सब मेरा वरमा गयौ छ अज्ञा भाग ज्या केही भयाका छन तन कन पृथक् २ जुदा २ गरी पांछु ॥ ६१ ॥ **यत्ना**
को ॥ तीन लोकमा ज्या केही भयाका वरमा मेरा वरमा गयौ छ मेरा वरमा हाथी इंडको वरमा मछेउछ ॥ ६२ ॥ **श्री**

६॥ दूधसमुद्रवाटनिसकाकोउडोः श्रवाघोडासवेदेवताहरलेमलाईसमर्पणगन्याकोछंदेह ॥ ६३ ॥ **यामिका** ॥ ज्योकेही
अहदेवताहउभयाकापनिगंधकारगपन्नगदेउज्याहृत्तभूतभईआजमसितआईशोभितभयोकोह ॥ ६४ ॥ **स्त्रीरत्न** ॥ ए
कत्तमास्त्रीरत्नवारखाजोभयाकोथिपोत्योआजतिमिलालाईपायोतिमिलेमेराघरमाआउनेपहूजस्कारणहामीरत्नभोगीक
साकोहो ॥ ६५ ॥ **मांयतवा** ॥ मेराकिमेकांछाभाईलाईनिशुंभनामहुंन्यावडोपराक्रमीभयाकोह ईदुईभाईमाजस्कोमनपन्या
कोतहावस ॥ ६६ ॥ **पामे** ॥ मेराप्रसादपरमवडोऐश्वर्यपनिपाउलासुखपनिपाउलातसर्थमेरापरिग्रहकनप्राप्तहुनुहो

बुद्धिआदरायनहोला ॥ ६७ ॥ **अखिरवाच** ॥ इत्युक्ते ॥ मेधाश्रविभंदयस्तोदूतकोभुंभप्रवादितवाक्यसुनिकनुदुर्गीजोहृतिगंभीरभईजांथी ॥
जिनलेजो जगतधारीराखाकोह ॥ ६८ ॥ **देववाच** ॥ सत्यमुक्ते ॥ दुर्गीवाक्यकहंघीनहेदूत। होतैलेज्याकोसाकोसत्यहृएकवाटपनीजुदाहैन
तीनलोककाप्रभुभुंभानिभुंभनीसत्यहृन ॥ ६९ ॥ **किंत्व** ॥ हेदूतमेलेएकप्रतिज्ञागन्याथ्याअल्पबुद्धिलेगन्याकोजोप्रतिज्ञासोसुन ॥
॥ ७० ॥ **जोमांज** ॥ जोमलाइतगममाजितनसकलाजसलेमेरागर्वकनदूरगलीजोमजनिकोतुल्यबलहोलात्योमेराद्यामिदहोला ॥
॥ ७१ ॥ **तदाग** ॥ हेदूतहोतैलेभुंभराजाइउगईमलाइजितनआउभनजितनसक्यापानिग्रहणहोलानसक्याहवेनभः

च. भा.
३१

निभन्यास ॥७२॥ **दूत उवाच ॥** अवलि ॥ दूत भंदू हे देवि जति तिमिले गन्या को कुराजु दैर हे दू मे रा मुख्यां जियो ई कुराहुं ती न लोक माशुं
भनिशुं भजे स्तो जो धी को हि दे ॥७३॥ **अन्ये वा ॥** अरु देवता पनि जस्का मुख्यां जिलो ई माखडाहुं न स गै न उस्तारा जात शुं भआ
पुछं रस स्वास्ती राजा रं जो रिस कला का ॥७४॥ **इंदा वा ॥** इंदादि देवता समस्त जन का जोरी लडन स गै न उस्तारा जा का मुख्यां जि
स्त्री संमुख गरी क सो जला ॥७५॥ **स्वास्ती ॥** हे स्वास्ति हो मैले भन्या को मान्या भयानिका मुखले राजा छे उहि उ न गया दे विचुल ठो स
माई यस्तो गौरवले ने जान्या छे ॥७६॥ **देव उवाच ॥** एवमे ॥ हे दूत हो भनि दुर्गा कहं थी शुं भरा जायला वलिया पराक्रमी छे न निशुं भ

पानिते स्ते दूत ॥ तर मैले गन्या को प्रतिजा अधिक ह्या ॥७७॥ **सत्वं गच्छ ॥** हे दूत तैले बाडो गइ ज्या सवै क ह्या को वाक्य आदर पूर्व कहनु न्य
सले ज्या के ही जो ग्यर भजो ग्य आ कै गती ॥७८॥ ॥ **इति मार्कण्डेय पुराणे ॥ ५ ॥** ॥ **अविस्वाच ॥** इत्वा क ॥ मेधा जा विनं कु नो हे सु
रथरा जात हा पदि दुर्गा को बा क्य सुनि गो दूत ले सवै विस्तार वाक्य शुं भना मरा जा छे उ कहिं **पुराणे ॥ १ ॥ तस्य दू ॥** तस दूत को
वाक्य सुनि शुं भरा जा छे उवा न मो नै ना ध गरी क न धू अलो व स दार क न दार कि कहं थ्यो ॥२॥ **हे भूष ॥** हे भूष लोचन देत्य हो तैले
आहु फा ड डली क न चाडो गइ त्या उ छ स्वास्ती ल्या ई पुन्या उचुल ठो समाति विहल भया को आवस ॥३॥ **तत्परि ॥** तस्कोर शा

गन्या को ही दूध भन्ना देवता भयापनि गंधर्व भयापनितो मारि आउनु ॥ ४ ॥ **अवि रुवाच** ॥ तेना शता मिधा अवि भंछन सस्ती वचन
धूसलोचन माधिशुभले भन्ना गन्या ही हजार फोजली धूसलोचन द ॥ ५ ॥ **सदृष्टतां** ॥ त्यो धूसलोचन हे मालय मागई दुर्गास
मी पमागई शुभने शुभने वापक हे शुभने शुभने को तिमिला इदा कनको दुकम द ॥ ६ ॥ **नचत्सी** ॥ श्री तिले आया देखि आया स
न आया तुल ठो समा निल्या सेया भनी मला इपठा ये छ मले जाउला ॥ ७ ॥ **देवु वाच** ॥ दैत्ये श्य ॥ दुर्गा भंधी हे दैत्य हो शुभराजाले तला
इपथाया को छत यनि डो वलि यो छ सवलले मला इले गयाम कया गरुला ॥ ८ ॥ **अवि रुवाच** ॥ इत्युक्त ॥ मेधा अवि भंछन सस्ती दुर्गाः

को वाक्य सुनि धूसलोच ॥ भन्ना दैत्य लडाई ॥ निकन दगुन्या को त दुर्गाले हुंकार गने मात्र धूसको छराने गर्थीन ॥ ९ ॥ **अमुक** ॥ तहा पछि ज्वाभ
या को दैत्य को फेड थिये तस्मा वडा ॥ ती ॥ गावाण बर्वाले वं चराले व छीले विनाश गन्या भईन ॥ १० ॥ **ततो धुत** ॥ तहा पछि बडा रोगरी क
न दुर्गा को सिंह पनि दैत्य व को डल स्वरमा गरी दैत्य को विनाश कन गर्थी ॥ ११ ॥ **काश्चित्कार** ॥ सिंहले कसे काना शहत हुलाले गर्थी को हि
दैत्य मुखले माया को हि दैत्य जे रले विनाशित गरी सब दैत्य को सत्यानाश पार्थी भये छ ॥ १२ ॥ **केवाचि** ॥ सिंहले नेडु लेगाई कसे दैत्य का
मुहु फिक न्या कसे दैत्य का क्षिर पनि गुहा २ गर्थी ॥ १३ ॥ **विदित्व** ॥ सिंहले नात्या को दैत्य मा कसे काहा तना ही को हि मुखले रगत पियाः

कोयस्ताविधिलेवडारेगयाकोसिंहलेदेत्यकोनाशगर्था ॥ १४ ॥ **शरणेन** ॥ सकाशणमामहात्मासिंहलेवडोकोपमुक्तभईसमस्त
स्करकोविष्टनाशगरिशके ॥ १५ ॥ **श्रुत्वा** ॥ ताहापद्धिभुभराजाहेउधवरगुणधूमलोवनपनिमरेछकोदज्याभयाकोछः
सिंहलेनासगरेछभनिसपापद्धि ॥ १६ ॥ **बुकोप** ॥ भुभराजावडोगुस्तागरिकनओठकनहोदातलेवापिकनचंडमुंडजोडुईदेत्यछ
नतनमाधिदुकमगर्था ॥ १७ ॥ **हेचंड** ॥ हेवणहेमुरादेत्यहोवडावलीभैकनदुइजनालेजालुपद्धित्योक्तोस्वास्त्रिदुत्यस्तालार्देमकः
नल्याइदिनुपद्धि ॥ १८ ॥ **कोरिवा** ॥ तस्काशिरातोरोसमातिवाधिकनल्याउनसक्याहतिथारलेवडुततरहकुटिमारुपली ॥ १९ ॥ तस्याह ॥

॥ तोडुछसिंहलाइस्वास्त्रिलाइपनिमारिहनुवोडेगमोरवाधिकनल्यास ॥ २० ॥ ॥ **इतिमाकेरोधपुण्यो** ॥ ६ ॥ **मभिरुवा** ॥ आज
प्रा ॥ मिभाभमिभद्वनतडापद्धिअरदमुरातोडुईदेत्यद्विबडोचतुरंगकोदलीकनअंबिकासंगलडनकनजांधा ॥ १ ॥ **ददधु** ॥ तहागयाप
द्विदेवछत ॥ अलिहासिंहवस्याकीरस्या ॥ नसिंहवाहनगयाकोहिमालयकोदुप्यामासूनाजस्तोदेधिया ॥ २ ॥ **तेदुहा** ॥ त्वदुइवडमुण्ड
लेदुर्गीकोलेजान्याउपायकोरामगर्था ॥ अरुधनुवतरवारलीअधिपद्धिहिडुदेदु ॥ ३ ॥ **ततकोप** ॥ तहापद्धिअंबिकाजोछनतनशत्रु
माधिकोपलेभरिपूरीभईकनरतइलाकोरुपजस्तोहपगरीमुरवपनिवडोशत्रुमाधिकोधगयाकोलाललालदुंध्यो ॥ ४ ॥ **अकुटी** ॥

उस्ताकोपगदोललादमा भोवरी पान्याको भूवाटवडा कराल मुखगन्या हातमा तरवार डोरी लीकन काली पैडा भईन ॥ ५ ॥ **विविध** ॥ विविध
एकतामा साकोर बडा गहातमा निरहोरे छु मुण्डमाला लायाको हाथी काट्टाला उन्या देह मा मा सुत भयाले धेर विकराल देख
न्या ॥ ६ ॥ **अतिवि** ॥ बडो विस्तर मुखगन्या कोरहे छु जिभोवा हिरो निस्काको लाल आखागन्या को भुयानक शबूले दिशा भन्यो ॥ ७ ॥ **सावे**
गे ॥ न्यो एस्ता तरहकी का लोका वेगले देख को फोड मा पसीन सव फोड को नाशगन्या देख को बलको भूरागन्या भईन ॥ ८ ॥ **पास्मि**
॥ कोही देख को कन गोडा का पैतलाले मान्यो कसैलाई घंटा शबूले एका हाती समेत मुखमा हाली जान्या ॥ ९ ॥ **तथेव** ॥ वडा जो जो धाख

घोरा रथ समेत मिरब भिन्नहाली कन दातले बडो शवूगरीयां थ्यो ॥ १० ॥ **एकजग** ॥ एका देख का शिर केश समाति मान्यो को हि विचरमा समा
ति मान्यो कसैलाई पाउले छातीले मान्यो ॥ ११ ॥ **नैर्मुक्ता** ॥ ति देख ले चलाया का जो शस्त्र छन अस्त्र छन ति सब दुर्गाले मुखमा हाली दातले पथी
॥ १२ ॥ **बलिना** ॥ बलवंत जो जो धाधियामा हातमा हुका समस्त बलमर्दित गरि जान्या अरु देख को विनाशगन्या ॥ १३ ॥ **अभिना** ॥ को हि देख
तरवारले मारि सुताया को हि रव गले को ही दंता गले विनाशितगन्या कानाशकन प्राप्ति थ्यो ॥ १४ ॥ **धामेन** ॥ एक धागमा समस्त जति भ
याका देख का फोड को नाशगन्या भईन अति तीक्ष्णो भीषण काली काले सब जति भयाको रस्कर नास्याको देख डा वरु देख पछि वाट

हगुथ्यो ॥ १५ ॥ शरवर्ष ॥ तहापदि चण्डरमुण्डदेत्यडुईलेनीमाक्षीमाथि हजार २ वाणवर्षालेचक्रवर्षालेआछादितगरीरहन्त्याभ
या ॥ १६ ॥ तानिय ॥ चंडमुंडदेत्यलेचलायाकाजोचक्रकालिकाकामुखमापसथ्यो ॥ १७ ॥ ततो ज ॥ तहापदि वेडोशवृगन्याजोडुगीछन
कालीवेडोशवृगरीकनकरालजोमुखदेवाउन्यादातलेउज्यालोडुथ्यो ॥ १८ ॥ उत्थायव ॥ तहापदि कालीजोदेवीछुंउदेत्यमाथिनानिक
नगडुशिरकाकेरासमाईतरवारलेकाटिकालन्याभई ॥ १९ ॥ अथमुंडो ॥ तहाचण्डदेत्यमायापदि मुण्डदेत्यलडाइगर्नआउथ्योत्योपनितरबार
लेकाटिकसनभैमावसाउथी ॥ २० ॥ हतशे ॥ तहापदि चण्डरमुंडडुईदेत्यकोविनाशदेव्यापदि न्याकेहीमरीवाकिरह्याकोदेत्यहरदिशा २

माभागथ्या ॥ २१ ॥ शिरमुंड ॥ तहापदि चंडदेत्यकोरमुण्डदेत्यकोशिरकाटीहातमालीकनकालिकालेवेडोप्रचंडहास्यगरीचण्डिः
काछेउभंथ्यो ॥ २२ ॥ मजातवा ॥ हेचण्डिकेमडलेतेरादुईपशुजोचंडरमुंडदेत्यथियातिमारिकनतघोमुघ्यांजिन्यामुदिओ अवरभुं
भनिभुंभैदेत्यकनयुद्धप्रजमाआफैमान्याह्यो ॥ २३ ॥ भाषिहवावा ॥ ताकावानीतो ॥ मेधाअभिभंडनकालिकालेचण्डरमुंडदेत्य
काशिरल्यायाकोदेवदाअंदिकाजोकेल्यालीछुतिरावावाककहंथी ॥ २४ ॥ यस्माद्धंड ॥ हेकालिकाजसकारणतैलेचंडरमुंडकोः
शिरकाटिमछेउल्यायेछुतसअर्थलोकमातमोनामवा मुण्डाभनिप्रदांतहोला ॥ २५ ॥ ॥ इतिमाकशेदयपुराणि ॥ ७ ॥ ॥

॥ गीर्वाण वाच ॥ वंदे ॥ मेधा भवि नंद नखरुद्र मुंड देत्य को विनाश भया को देव दाधेर को दना सिंदा असुरेश्वर शुभ देत्य जो ॥ १ ॥ ततः को
प ॥ त्योता हा पाद वडो को पयुक्त भद्र कन पराधीन विन भया को देत्य कारस्कर दुकि आजा दित्यो ॥ २ ॥ **अथ सर्व** ॥ आज का दिन मास वज्र सिंभया
कामि रासि पाहि भारा दार देया सी भारा दार कवुद का बौरा सी जाउ आक्रा २ फेडली कन जाउ न ॥ ३ ॥ **कोटि वी** ॥ पचास भारा कोटि वी र्म देश
का असुर कुल जाउं मेरा आजा जानि धौ मदेश का रुक राय कुल जाउं न ॥ ४ ॥ **कालिका दौ** ॥ काल कदेश दौ हृद देश का जति भया का देत्य वाडो
धनुष वाणली कन लडाइ गर्न कन दगुद ॥ ५ ॥ **इत्यादि** ॥ यस्तो शुभराजाले मुलुक को फारालगाई कन आकुपनि हजार २ फेडली कन ल

डाई गर्न कन हि दुथ्यो ॥ ६ ॥ **आखाने** ॥ जाहा दुर्ग भया को जगामा त्पोर स्कर पुगे छ वडो भयानक त्पोर स्कर पुगे छ वडो भयानक आकाश पनि पृ
थी पनि अभिया नि धनुष शस्त्र लेग न्यो भयो ॥ ७ ॥ **ततस्मिं** ॥ तहा पछि सिंह पनि वडो शवृग न्या हेरा जा हो घंटा शवृले अम्बिका समस्त लस्कः
रकन न्युगर्थी ॥ ८ ॥ **धनुषी** ॥ धनुष ताका रलि सिंह का शवृले घंटा का शवृले दश दिशा भरि पूरा दुंथ्यो ताहा पछि कालिका पनि बिस्ता
र मुख गर्थी ॥ ९ ॥ **तन्निना** ॥ त्यस्तो अथाहा भयानक शवृ सुनि देवी कन रसिंह कन देत्य कारस्कर मा चारै दिशा देवि वेष्टित गर्थी ॥ १० ॥
स्तस्मिं ॥ हेराजा होय सवेला मा देत्य को विनाश गर्न नि नि त देवता को कल्याण निमित्त अति पराक्रम ले युक्त भया का ॥ ११ ॥ **वसु श**

कं मा-
३७

देह

ब्रह्ममहादेवकुमारविष्णु इंदु का जोशक्ति छंति अंदिका का देहवाट निस्किकन जो रूपत नम्रय दुंथ्यो ॥ १२ ॥ **अस्यदे** ॥ जसदेवता को जसातरको रूपधियो
जसो वाहन को रूपधियो तस्को शक्ति त्वसे रूप संगत पार भै देत्य संगल इन्दा भयो ॥ १३ ॥ **हंसयु** ॥ हंस युक्त विमानमा वस्था की मालारकमंडलु हातः
माली कने ब्रह्मणी शअं विकावाट निस्कंथ्यो ॥ १४ ॥ **माहेश्वरी** ॥ माहेश्वरी जोशक्ति छंति वषमा वसि त्रिशूलवरहातमाली कनव डो नाग को मालावेष्टितगन्या
को कपालमा चनुमारा धी धेर गहना उना निस्कंथ्यो ॥ १५ ॥ **कोमारी** ॥ कोमारी शक्ति वही हातमालिया को मयूरवाहन गरी कार्तिकेयको रूपली कने देत्य सं
गल इनतयार दुंथी ॥ १६ ॥ **नथेव** ॥ त्वसेवला मा विष्णुको शक्ति गरुडमा वस्था को शंखचक्र गडा धनु हातमाली तरवार कंवरमा बाधि निस्कंथ्यो ॥ १७ ॥ **अज्ञवा** ॥
कि २

३७

यज्ञवागह को रूप धान्या अतुल हय दूय स्रो वाराही निस्क्यो ॥ १८ ॥ **नारसिं** ॥ नृसिंह को शक्ति नृसिंह को रूप धि पन्न शत्रुसंहति तहा प्राप्ता दुंथ्यो ॥ १९ ॥ **नम्रहा** ॥ वज्रहा
तमालीया को ऐरावत हाती मा चही हजार ॥ रवाभया को इंदु को रूप दुंथी शक्ति निस्क्यो ॥ २० ॥ **ततोपरी** ॥ तहापछि ईशानमा जो महादेव छंति न शक्ति लेः
वेष्टित भई कनचंडिका संग वाक्का कहन्या बाडो देत्य हान्या ॥ २१ ॥ **ततोदेवी** ॥ तहापछि अंदिका का देहवाट दक्ष शिपालको शव को वडो भयानक
शक्ति निस्कंथ्यो ॥ २२ ॥ **साधार** ॥ त्यो चण्डी धूम्रवर्ण को जटा धारी शिव कन उत्तर क हंथी हे शिव हो. तिमिले शुंभनि शुंभदे उग इजु वापक ह ॥ २३ ॥
दुर्गेश्वरी ॥ शुंभनि शुंभदे उ पुगी कहनु धेर तनू काग वर रहेछ अफयनिल डा दुर्गनु कन आयाका युद्ध गर्न उपस्थित जा भयाका छन ॥ २४ ॥ **त्रिलोकी**

॥ तनू दे उयो जु वाप कहनु त्रै लोको को अधिपति इंदरा जाहवसु जति भया का देवता हरु हवन यज्ञ को फल पाउनु सब दैत्य हरु जीवन का इच्छा
भया पाता लमा पुगनु ॥ २५ ॥ **बलावले** ॥ हे दै होत मो धेर वले दुभन्या युद्ध को कांछा गछै तव छिया लडाइ गन आउ मेरा सिपाल लेन मो मासु खान्ये छ
॥ २६ ॥ **यतोनि** ॥ जस अर्थ तस दुर्गाले शिव देवता लाई दूत काम मापठा ये छ तस काम ले शिव दूती भनियो नाम लोक मा प्रख्या त होला ॥ २७ ॥
तेविभुश्रु ॥ दैत्य हरु ले शिव को बचन सुन्या पछि अमर्ष ले पूर्ण भई कन जहा कात्यायणी वस्या को जगमा पुगन्या भया छुन ॥ २८ ॥ **ततः प्रथ**
ताहा पछि उ जे छ जो दानव छंति पहिले वछी **वर्वागरी** दुर्गा कन आछा दित गरी लइया ॥ २९ ॥ **सावतान** ॥ न्यो दुर्गा ति दैत्य हरु ले पठाया का कारण

रक्षल वही वन चरा हरु कनली लागरी भेमा भसाउ न्या धनु धवाट वारण कि को दैत्य माधि मारी न ॥ ३० ॥ तस्याग्रत ॥ तस कामु घ्यां जि **अधिवाट** कालि
का तिस्की कन खडांगले दैत्य को विनाश गथी ॥ ३१ ॥ **कमंड** ॥ कमंडलु का जल सिंघन ले नुन को बल पराक्रम दिने छ तस्का बला गरी नाम शक्ति
दैत्य विनाश गथी न ॥ ३२ ॥ **माहेश्व** ॥ माहेश्वरी शक्ति विशूल आयु धले वैष्णवी शक्ति दैत्य माधि वडो को पग दे विनाश गथी न ॥ ३३ ॥ **खंडी**
कुलि ॥ खंडी शक्ति वज्र निबीत गरी एक शय संख्या भया का जो दैत्य छंति पृथी मापदै मर्धारगत वहाउ न्या दुंथो ॥ ३४ ॥ **तुण्ड** ॥ तुण्ड प्रमुख दंत ले ज
न कामु दुर्गा भुदि फो न्या को जाठाराह शक्ति ले चक्र मायु धले दैत्य विनाश गथी न ॥ ३५ ॥ **नखेवि** ॥ नारसिंही शक्ति ले नडु ले मारी कन

मुरवले को हि विनाशगन्या को दैत्य मर्था को हि दैत्य वडा शवूले नाशक न प्राप्त गथी न ॥ ३९ ॥ **मंडाह** ॥ शिव इतिले वडो प्रचंड अह हास शवूले अ
भिदूखित भया का जो दैत्य छं त्यो पृथिवी मा परि मर्था ॥ ४० ॥ **इति मात** ॥ यस्ता तरह मातृ गण धेर कुद्ध भई दैत्य हस को विनाशक न प्राप्त हुं न्याः
देवारि दैत्य से नापनि नाशित हुं न्या ॥ ४१ ॥ **पलायन** ॥ धेर २ वडा २ सहीर म न्या कार ह्या छ जस्तै दैत्य का फोड मा भाग्या को दैत्य देखे दाल डा इगर्नः
कनरक्त वीज नाम दैत्य लइन कन दगु र्थो ॥ ४२ ॥ **रक्त विंदु** ॥ रक्त वीज कस्तोर हे छ शरी रवा टर कवू डर गत परोस्त उसै वेला तनु ल्ये पराक्रमी रक्त वी
ज बडा हुं न्या भयो ॥ ४३ ॥ **मुमुक्षु** ॥ त्पोर रक्त वीज भन्या को दैत्य ऐं डी शक्ति संव गले डा इगर्न कन तयार भई गदा युद्ध गथी सन्धी ले वज्र भा मु धले मान्यी भ

इति ॥ ४४ ॥ **कुलिश** ॥ वज्र ले हान्न मात्र रक्त वीज को देह वाट धेर रगत निस्कं थ्यो । तसरगत वा तय स्रोत पग्या को त्यस्तै पराक्रमी दानव निस्कं थ्यो ॥ ४५ ॥
जायंत ॥ जति रगत का बुंद निस्कं थ्यो तत्तिवल पराक्रम रूप वंत तिनि स्कि बडा हुं थ्यो ॥ ४६ ॥ **तेजावि** ॥ तित्यत्तिकार रक्त वीज नाम दैत्य भय शक्ति
संग वडो भयानक लडा इगथ्यो शास्त्र पातपनि गथ्यो ॥ ४७ ॥ **पुनश्च** ॥ फेरी ऐं डी नाम शक्ति ले मूल रक्त वीज का शिर मा वज्र निघीत गर्दी शिर कन का
तदारगत गंगा वहं थ्यो हजार २ दैत्य हुं थ्यो ॥ ४८ ॥ **विष्णु** ॥ विष्णु वी शक्ति ले वक्र गदा हात मा ली कनरक्त वीज नाम दैत्य कन मान्या पट्टि ॥ **वैष्णवी** ॥
वैष्णवी यक्र ले हान्न मात्रै को हि हजार अनेक रक्त वीज निस्कं थ्यो । समस्त संसार व्याप्त मान हुं थ्यो ॥ ४९ ॥ **शक्राज** ॥ कोमारी नाम शक्ति बही ले रक्त

बीजकनहान्याभयी वाराहीतरवारलेमोहेश्वरीविश्रूललेरक्तबीजकनहोथी ॥४८॥ सवापि ॥ त्पोरक्तबीजनामदेत्यमातृकामाधिकोपलेसं
युक्तभईकनरक्तबीजदेत्यअष्टशक्तिकनजुदाशगरीहोथी ॥४९॥ तस्याहत ॥ फेरिअष्टशक्तिलेधेरश्रूललेरवदिलेहोडारक्तकाजोसं
मूहभेमापथ्यात्यसलेशयशजोधाडुंथी ॥५०॥ तैश्चासुरा ॥ त्पोरक्तसमूहवाटसमस्तदानवलेअभिव्याप्तभयाकादेष्टदादेवताभयले
तसंथी ॥५१॥ तानविषं ॥ वल्लिकालेताहापद्धिवडाडुःखलेडुःखितभयितस्याकादेवताहरुदेष्टदाहासीकनकालीछउभंथीनजिभो
रगतमालानविस्तारमुखगरभनिकालिसितभंथीन ॥५२॥ मछस्र ॥ जसेमेराशस्त्रलेरक्तविंडुपली त्पोरक्तमुखलेखानुःपद्धिदगुः

गुदेरहनुपली ॥५३॥ भक्षयंश्चरंगदेवि ॥ हेकालिलडाडुमाउपजिविस्त्राकोदेत्यषानुहस्तातरहएकक्षमादेत्यकोनाशहोला ॥५४॥ भक्षमा
रगा ॥ हेकालीइदेत्यभयारवाइदिनुअपिउपजननपावस ॥ भनमात्रैश्रूललेदेत्यकाबिरमाथीन ॥५५॥ मुखेनका ॥ श्रूललेमायापद्धिरक्तबीजका
रगतसमस्तकालीलेमुखमाहालथीन ॥ तहापद्धि त्पोदेत्यअरदीकनगडालेताडिनगर्थी ॥५६॥ नवास्यां ॥ त्यसूरक्तबीजदेत्यकनगडापीडागरिक
तिपनिडुगीलाईयेतनानहुन्याभयोफेरिरक्तबीजकादेहवाटधेरैरगतवहंथी ॥५७॥ जतस्तस्त ॥ जहाताहावाटरगतनिस्कनलाएथ्योतहाप
द्धिकालीलेत्पोरगतकोजतिजाहानाहिमुखमाहालदेसकथीन ॥५८॥ ताश्चरवादा ॥ जतिभयाकोरगतकोसमूहपीउदेगयाकोकालीलेश्र

ललेवज्जलेवाणमा न्यागयाको ३० दिनाले ॥ ५२ ॥ जघान ॥ यत्तो गदीरक्तवीजनामदेत्यरगतसवयामुण्डलेपियाको भैमापरिमथ्यो शस्त्रसं
घातलेत्योरक्तवीजमथ्यो ॥ ६० ॥ नीरक्तशु ॥ हेमहीपाल नीरक्तभयाको रक्तवीजदेत्यमर्द्धादिदशजो देवता छ तिहर्षकनगर्थ्यो ॥ ६१ ॥ तेषां
मातृ ॥ हर्षञ्च सर्वलोकानां देवगंधर्वमानवाः ॥ ६२ ॥ समस्तदुर्गाजतिभयाकातिनाचला उन्यारगतपियाको मडले उद्धभयाद्वनरवकुतैशुसि
हुंथ्या ॥ ॥ इति मार्कण्डेयपुराणे ॥ ८॥ ॥ राजोवाच ॥ विविच ॥ सुरथनामराजा सोधनीगर्हन् हेमभाभविहो यो विविच कथातिनिलेम
छेउकथो दुर्गाको चरित्रकथारक्तवीजवधसुन्यां ॥ १ ॥ धृयश्चे ॥ फेरिपनिमइहागद्वुरक्तवीजदेत्यमान्यापद्धि शुभराजानि शुभराजालेक्या

कामगर्थ्यो ॥ २ ॥ अथिरुवाच ॥ चकार ॥ मेधाभंघिभंद्वनरक्तवीजदेमान्यापद्धि शुभनिशुं नैदेत्यकनवडोको पडुंथ्यो ॥ ३ ॥ हन्यमानं ॥ शुभराजाले समस्त
आप्पुपुरयफोडलीकनवडोअमर्धवाधिदुर्गामाथीलडनेभनिदगुर्थ्यो ॥ ४ ॥ तस्याग्रत ॥ त्यो शुभराजाअधिवाट ओठवापिकनवडो २ योधाहिदे दे
वीमानेकनशुभराजादगुर्थ्यो ॥ ५ ॥ आजमा ॥ शुभराजालेवडोआप्पुफोडमालीकनवडापराक्रमलेसंयुक्तभईअष्टशक्ति संगलडुथ्यो चरिदकनमा
न्याकनउद्योगगर्थ्यो ॥ ६ ॥ ततोयुद्ध ॥ तहापद्धिदेविकोरनिशुभकंशुभकोरवडोयुद्धहुंथ्यो ॥ ७ ॥ शरवाणकोअसिनाकोडोलपरिवेषहुंथ्यो ॥ ८ ॥
विदेहस्तां ॥ बंडिकाजोदुर्गाछं तिशुभनिशुं भिकादेहमाविद्धगरीशस्त्रलगाउन्यातिदुईदेत्यलेदुर्गाकादेहमाविद्धमागरे ॥ ९ ॥ मिशुं

भो ॥ तहापद्धि ति श्रुंभेदेत्यलेवडोती क्षातरवारढाल हातमाली सिंहवाहनकाशिरमाभार्थो ॥ ११ ॥ ताडिते ॥ वडाती वातरवारले सिंहका शिरमामान्या
पद्धि अष्टचन्द्रकोतुल्यजेवाणद्धत्यसले दुर्गनि श्रुंभकोढाल फाट न्या भइन् ॥ १० ॥ दिनेच ॥ निश्रुंभले ढालका घापद्धि वद्धि निश्रुंभले चलाउनमा
त्रदुर्गले आयुधले द्विभागगर्थीन् ॥ ११ ॥ कायाध्यातो ॥ कोपले पूर्णभयाकोदेत्यशूल हातमाली लडन्याभयो आर्षपन्याकोदेविले त्योपनि चरित
गरी भैमा फाल्थ्यो ॥ १२ ॥ आविष्टाथ ॥ त्यो फाल्पापद्धि गदा हातमाली कनचरुिकामाथिमान्यभयो त्योगदापनि दुर्गा त्रिशूलले काट्थी त्योपनि
भस्महुंथ्यो ॥ १३ ॥ ततः पर ॥ तहापद्धि वनचरो हातमाली कननिश्रुंभआयाकोदेष्टदावाण समूहले मारी भैमापारी फाल्थीन् ॥ १४ ॥ तस्मिनि ॥

तहापद्धि निश्रुंभ भैमापदी भीमपराक्रमी कोविदशाभयाकोदेष्टदाश्रुंभवदोकोपभई अं विकामार्तकनउद्धृत्यो ॥ १५ ॥ ^{मुक्त}सरथस्थ ॥ त्यो श्रुंभराजाव
दापराक्रमी रथमाचर्धी परमवद्वा २ आयुधली आठ हातले युक्तभयाको अकाशरघुथी वीद्यामगरी वस्यथ्यो ॥ १६ ॥ तमाया ॥ त्यो श्रुंभआमा
कोदेष्टदा दुर्गा शंखबाधवजाउन्मा श्रुंभराजा धनुषचापभ्याको दुःसहशदुर्गार्थी ॥ १७ ॥ पूर्या ॥ त्यो श्रुंभराजा काघंटाशवले दशदिशाभार्थो समस्त
देत्यसेनाको तेजपनि वधन्या दुर्गा तेजकावधकारी जो देत्यतेजपनि वध्थो ॥ १८ ॥ ततस्मिन् ॥ तहापद्धि सिंहलेवडोशदुर्गरी आकाशरघुथी पृ
र्गभई जांथ्यो दशदिशापनि भरिंथ्यो ॥ १९ ॥ ततः काली ॥ तहापद्धि कालीले उठिकनयस्तोशदुर्गरेष्ट हातले भैमापारी कनअधिकोशदुर्गरा

(उन्यागरेछ ॥ २० ॥ **अष्टादहा** ॥ शिवदूतीवडो अष्टा सशदलेगरीत्यसशदले सेवेदैत्यरंभराजावडोपडुंथो ॥ २१ ॥ **दुरात्म** ॥ जसवेला माअंवि
कालेदुरात्माशुंभकनवडाभईआभनेमात्रेत्यसवेला मा आकाशमावस्योकादेवताहहजय २शदगर्थी ॥ २२ ॥ **शुंभेमा** ॥ शुंभराजालेदुर्गाः
माधिजोवछीचलायाकोआगाजलो जलन्याते जवंत बछमिहोल्कादुर्गालेत्यो नरैल्लगरी फरालेछ ॥ २३ ॥ **सिंहना** ॥ हेअवनीपतेराजा हीसिंहकाश
दलेरशंभराजाकाशदलेतीनलोकव्याप्तभईजांथ्या ॥ २४ ॥ **शुंभमु** ॥ शुंभराजालेमुगयाकावाणवर्षाकनेदुर्गाकाटी फालथी दुर्गालेमार्नक
नल्यायाकाजोवाणसमूहकाट्थ्यो ॥ २५ ॥ **ततःसा** ॥ तहापछिजरिदकावडोकोपगरीत्यसशंभकनशूललेमाथीत्योशुंभमूर्द्धिभईभैमा
त

पर्थी ॥ २६ ॥ **ततोनिशुं** ॥ तहापछिनिशुंभदेत्यलेचेतनापाईकनहातमाधनुवाणालीकनैनसिंहलाइमार्थी ॥ २७ ॥ **पुनश्च** ॥ तहापछिनिशुंभदेत्यले
दशहजारहातलेदशहजारचक्रदुर्गामाधिचलाउन्नाभयोचक्रवर्षालेजरिदकाकनछादितगर्थी ॥ २८ ॥ **ततोभग** ॥ तहापछिदुर्गाजोभगवतीहंतिः
नलेवडीकोपगरीतिसखद्वयकोकाटिनाशगरेछ ॥ २९ ॥ **ततोनिशुं** ॥ तहापछिनिशुंभदेत्यलेवेगलेगदाहातमालीकनजरिदकाहान्नभनीसेनाः
वेष्टितगलीलइनकनदुर्गा ॥ ३० ॥ **नस्यायतन** ॥ त्योनिशुंभराजागदाहातमालीकनआइपन्याकोदेखनमात्रजरिदकालेतिबोतरवारलेहानि
गडाकाटिफालेस्फेरशूललेथ्यो ॥ ३१ ॥ **शूलहस्त** ॥ शूलहातमालीकनलइनआभाकोनिशुंभदानवलोईदेखनमात्रआपुननिवेगलेहृदयः

माभूललेहान्याभई ॥ ३२ ॥ **निशुंभका** हृदयमाभूललेहारीविदिहकुंथातस्येर्वेला मा ^{वली} हापुरुष हृदयवाटनिस्कथ्योतिष्ठ २ इतिकह
नलागथ्यो ॥ ३३ ॥ **तस्यनिः** का ॥ निशुंभका हृदयवाटनिस्कथ्योको जो देत्य हृदयको शिरपनि तरवारले काटथी न त्यो शिरभे मापथ्यो ॥ ३४ ॥ **ततः**
सि ॥ तहापछिसिंहले हात घुरला उदै देत्य नाशगथ्ये काली भई नति अरु दान वक्षयगथी न ॥ ३५ ॥ **कोमारी** ॥ कोमारी शक्ति वही चलाई देत्य को
विनाशगथी न ॥ उहाणी मंत्र जलले सिंचन गरी देत्य को विनाशगथी न ॥ ३६ ॥ **माहेश्वरी** ॥ माहेश्वरी शक्ति त्रिशूलले हांथी अरु देत्य माथ्यी
बारही तुं दघातले हानी को ही देत्य चूर्ण गथी ॥ ३७ ॥ **रवंडखरंड** ॥ वैष्णवी वक्र आयु धले रवण्डखरंड गरी फालथी न वेजले रथी शक्ति ले देत्य :

को क्षयगथी ॥ **वेविदिने** ॥ कोहि देत्य को यस्त्या यस्त्या तरहना सितकुंथा कोहिकालिले भाक्षितगथी कोहि नास्या को देत्य मथ्यी ॥ ३८ ॥
॥ **इति मार्कण्डेयपुराणे** ॥ ६ ॥ ॥ **अधिरुवाच** ॥ निशुंभं नि ॥ निशुंभं देत्य मया पछि भावा भाव मया का दुःखले समस्त को ज सका पछि
शुंभराजा कुद भई गुवापक हंथो ॥ १ ॥ **वलावले** ॥ हे दुष्ट दुर्गजी वात्मा हो अर्का कावलले गर्व गछो अरु को वल पाई लडाई गछी गुमानी छे स
॥ २ ॥ **देखुवाच** ॥ **एकैवाहं** ॥ दुर्गा कहंथी न हे दुष्ट देत्य हो एक मलाई मात्र देषई अष्टशक्ति मेरा वं विभूति दुन मेरा देह संग ली न कुन्या छ ॥ ३ ॥
॥ **अधिरुवाच** ॥ मेधा सविभद्ध न तहापछि उहाणी घमुख जो अष्टशक्ति छ ति आं विका देह मालिन कुंथा ते हापछि एक अं विका मात्र देषथी

चं. भा.
४५

न ॥ ४ ॥ देवु वाच ॥ अहं विभू ॥ हे शुभ अष्टविभूति मईले आक्रा देह माली नगन्या एक रूप देवत घडा भईलड ॥ ५ ॥ भविरु वाच ॥ ततः प्रव ॥ मेधा अ
भिभं हन तहा पद्धि देवी कोर शुभ को वडो भयानक जुहुं थो देवतोपनिता मासा देधन्या भया हन ॥ ६ ॥ शरवर्ष ॥ वारावर्षाले तीक्ष्ण अस्त्र निघीत
गन्या लेसवलोक को भयं न्या युहुं थो ॥ ७ ॥ दिवान्य ॥ दिव्य जो अष्टवर्षा अं विका गथनि त्यो शुभराजा काटि फाल् थो शुभलेगन्या को अस्त्रवर्षा अं
विका कादधीन ॥ ८ ॥ मुक्ता निते ॥ त्यस शुभराजाले दिव्य अस्त्र जसे लाउ थो परमेश्वरी जगदं वाहुं कारी वारणाले तसे कादधीन ॥ ९ ॥ ततः शर ॥
तहा पद्धि एक शर वर्णाले आछा दित गथो त्यो शुभदुर्गा कनतिपनि वाराले धनु काटि फाल् थो ॥ १० ॥ द्विने धनुषि ॥ धनु काद्या पद्धि त्यो देव वही

को
हात माली थो त्योपनि दुर्गाले वक्रले काटि फाल् थो ॥ ११ ॥ ततः स्वक ॥ तहा पद्धि वातचंद्र सूर्य को कांति गन्या तरवारली कन शुभदुर्गा पद्धि दुर्गो
॥ १२ ॥ तस्या पतत ॥ त्यो शुभनाम देव को तरवार आक्रमे आश्रय्या को देवदाती क्षण वाराले छाल पनितरवार पनिकाटि दिव्या भईन ॥ १३
॥ हतो श्वः ॥ तिघोरसमेत सारथि धनु काद्या को शुभ देव वडो मुकुलली दुर्गा मान भनित शरहुं थो ॥ १४ ॥ विद्धे दा ॥ मुजर पनिली क्षण वारा
ले काटि दिगोर फेरी देवले मुखि उठाई कन दुर्गा पद्धि दुर्गो ॥ १५ ॥ समुष्टि ॥ त्यो शुभ देव मुखि कन दुर्गा का हृदय मा माथ्ये दि दुर्गापनि ह
त ॥ लाले छाति मा माथीन ॥ १६ ॥ तल ब्रहा ॥ तलहत इ लाले माया को त्यो शुभनाम देव जाडो उथि कन फेरी लडा रगन आउ थो ॥ १७

चै. भा.
४६

॥ उत्पत्य च ॥ तपो शंभनामदैत्ययात्रो अकाशमागच्छ निराधार भई चंडिका संगवडो युद्धगर्थो ॥ १८ ॥ नियुद्धं ॥ वसिष्ठ संग अकाशजा ईपरस्पर नडाई गः
र्थो त्वसंले मुनिगण सिद्ध देवता हरू आश्चर्य मांथ्यो ॥ १९ ॥ ततो नियुद्धं ॥ तहा पछि आकाशमा धेर वेर संमलडा भै अं विकाले दैत्य लाई घुमाई भै
माफालयीन ॥ २० ॥ सक्षि सो धर ॥ तपो भै माप न्या को दैत्य मुविहान्न कनत यार भै दुर्गामार्न कनजंथ्यो ॥ २१ ॥ तमा यो तं ॥ तपो दैत्य आफु माथि आ
ईप न्या को देवदा शूल ले हानि कन हृदय मा मा र्थीन ॥ २२ ॥ संगता सु ॥ शूल ले शंभ को घा ए मुक्त भई भै माप र्थो त्वस शव लो सा त समुद्र काम
थ्या समस्त पृथ्वी काम न्या भयो ॥ २३ ॥ ततः प्रसन्न ॥ तहा पछि दुरात्मा शंभनामदैत्य म न्या पछि जगत्संसार धेर स्वास्थ्य दुंथ्यो अकाशपनि

निर्मल कुंथ्यो ॥ २४ ॥ उत्पात मे ॥ उत्पात उल्का जति उपडव भया का शांत कुंथ्यो सरित जो नदी छं ति प्रवाह राघो तर हसित वहंथ्यो ॥ २५ ॥ ततो दे
वगणा ॥ तहा जति भया को देवगणा छं ति हर्ष युक्त भई शंभम न्यो भनि मं धर्ब हरू मंगल गाउ न्या अपसरा नाचना भईन ॥ २६ ॥ अवा दयं ॥ अ
काशमानगरार अरु वाद्य बजाउ न्या भया छं अग्निपनि शांत कुंथ्या दिशा पति उज्यालो भया को रहै छ ॥ २७ ॥ जग्बेलु श्या ॥ सूर्य राघो ते ज
देवा उ न्या अग्नि शांत सब जग्गा आनन्द दुंथ्यो ॥ २८ ॥ ॥ इति मार्कण्डेय पुराणे ॥ १० ॥ ॥ अथि रुवाच ॥ देवा हते ॥ मेधा अथि
भद न हे असुर हो दुर्गाले शंभनामदैत्य युं मा न्या को देवदा इड कन अपिलाइ समस्त देवता हरू वर पाउला भनि मुख कमल

लेदशादिशाअप्रिव्यामगरिकनकात्यामनिकोस्तुतिगथो ॥ २ ॥ देवाडुवुः ॥ देविप्र ॥ हेदेविप्रपनानिहारितिमिहो अखिलजगतकोआ
माहो हेविश्वेश्वरितिमिवराचनगतकीर्तिरूपआफैहो यस्तातिमिप्रसन्नभेदिमा ॥ ३ ॥ आधार ॥ हेउर्गेतिमितंसारकोआधारऊनकनपृथि
वीवस्थाकीहोसमस्तदुनिआजलरूपलेपालहोतत्रोपराक्रमलंचितगर्नककोह ॥ ४ ॥ त्वैस्म ॥ हेदेवीतिमिबैस्मवीशक्तिअनंतवीर्यहोति
परममाया रूपहोतिमिलेयोसंसारमोहितगत्याकोहसंसारमाभुक्तिमुक्तिकोहेतुआफैहो ॥ ५ ॥ विद्यास ॥ हेदेवीतत्रासमस्तविद्या
भेदहोअसलरात्रोजोस्त्रीरूपतत्रोहोअंकारकतिमिलेयोसंसारभरिपूर्णभयाकोहतत्रोस्तुतिकोगर्नसकला ॥ ६ ॥ हेदेवि सर्वस्व
केयस्तातत्रोस्तुतिगर्नकोसकला ॥ ७ ॥ हेदेविसमस्तजनकाहृदभयमावसिबुद्धिरूपतिमिहोस्वर्गकोमोक्षहेतुकोवरदिन्याआफैहोहेनार

तिसिकनप्रणामहो ॥ ७ ॥ कलाका ॥ कलाकाकाहूपलेपरिनाममोक्षरूपविश्वसंसारमाउपरततिमिहेनारायणितिमिकनप्रणामहो ॥ ८ ॥ सच्चिं
॥ जतिभयाकामंगलमंगलरूपसर्वार्थदिन्याशरण्यजोशिवगौरीनारायणीरूपकनप्रणामहो ॥ ९ ॥ सृष्टिस्थिति ॥ सृष्टिस्थितिनिविनाशहेतुनित्यः
सतातनसंतुष्टरूपगुणश्रयरूपगुणमयरूपनारायणिरूपकनप्रणामहो ॥ १० ॥ शरण्यगत ॥ जोशरण्यगतदीनार्नप्राणिहृत्तनकोपरित्राणः
रक्षागण्यसर्वजालिकोकहनाशन्यानारायणीरूपकनप्रणामहो ॥ ११ ॥ हंसयुक्त ॥ हंसयुक्तविमानमावसिजलाणीरूपधारीकुशजल
लेदत्यकोसिंचनगरीदैत्यक्षयगर्नानारायणीरूपकनप्रणामहो ॥ १२ ॥ त्रिशूलच ॥ अर्द्धचन्द्रभालमाराधनीत्रिशूलहातमालीवृक्षमायदी

मोहेश्वरीरूपकननारयणीरूप० ॥ ^{१३} **मयूर** ॥ मयूरकुबुरालेवोष्टितगरीवद्धीहातमालीकौमारीरूपकननारयणीरूपकन० ॥ १४ ॥ **शंखच**
 ॥ शंखचत्रगदाधनुहातमालीकेवलवैष्णवीरूपतमोद्धनारयणीरूपकन० ॥ १५ ॥ **गृहीतो** ॥ हातमाचक्रलियाकोदंतलेष्टुथिवीउवाल्या
 करस्तावाराहीरूपनारयणीरूपकन० ॥ १६ ॥ **नृसिंह** ॥ वडोप्रवरुद्धनृसिंहरूपगरीविसंगरीदेत्यकोविनाशरूपतीनलोककोरक्षकनारय
 णीरूपकन० ॥ **किरीटि** ॥ हजारआरवाभयाकोशिरमामुकुटराखाकोदृतासुरदेत्यकोप्राणहारीनारयणीरूप॥ १७ ॥ **शिवदू** ॥ शिवदूतीस्वरु
 पलेमहावलंबंतभद्रलोघोररूपतमोद्धदेत्यकोविनाशगन्यारूपनारयणीरूपकन० ॥ १८ ॥ **दंष्ट्राकर** ॥ वडा२ दंतलेसंयुक्तशिरमाला

शिरमापहिरीचामुराडारूपनारयणीरूपकन० ॥ २० ॥ **लक्ष्मी** ॥ लक्ष्मीरूपलज्जामहाविद्याश्रद्धास्वरूपपुष्टिध्वरूपधारीमहारात्रिरूप
 नारयणीरूपकन० ॥ २१ ॥ **मेधास्वरु** ॥ मेधारूपसरस्वतीरूपवाध्विरूपतमोद्धनित्यरूपनारयणीरूपकन० ॥ २२ ॥ **सर्वस्वरु** ॥ सः
 र्वस्वरूपसर्वशरूपसर्वशक्तिरूपभयदेवीरक्षितगन्यातिमिहोहेदेवीतिमिदुर्गाहोर्मादेवीकनप्रणाद्ध॥ २३ ॥ **सर्वतः** ॥ सर्वथाणिमाति
 मिआदिस्वरूपअंत्यस्वरूपसृष्टिप० लयस्वरूपआफेदुतिमिनारयणीरूपस्वरूपकनप्रणामद्ध॥ २४ ॥ **रुतले** ॥ जोतीनआरवाभयाकोत
 मोरूपतुंदरद्धहोसवभयमारहागन्यातिमिकात्यायणीलाप्रणामद्ध॥ २५ ॥ **ज्वालकर** ॥ ज्वालोधेरभयाकोउग्ररूपअसुरदेत्यको

च. भा.
४६

नासगन्या। जो प्रभूलक्ष्म्योरक्षागरी सतिमि भयकालिक नखणामछ ॥ २६ ॥ हिनस्ति ॥ जस्य घंटा ले दैत्य हरू काते जको विना शगरेछ संसा
रभरी पूरुगन्या पापसंखल गन्या हे देवी तिमिरक्षागरीस ॥ २७ ॥ असुरसु ॥ असुरका वसाले रगत ले जे रको धारमा अभिवाप्त भयाको
जोरवज्रछ त्यो कल्याणगरी सतिमि क नखणामछ ॥ २८ ॥ ॥ रोगानश ॥ हे दुर्गे तिमिसंतुष्ट भयापछि रोगनाश होला कुष्ठ भयापछि
कामनाशला। तम्रा आश्रयमा लागन्या का विपत्तिहुं दैन। तम्रा आश्रयगन्या का शरणमा मानि सजा छुन ॥ २९ ॥ सतकृतं। हे आद्य
हे दुर्गे जो तिमिले धर्म देवी दैत्यको कदनगन्या ॥ कोरु अनेक रूपली अनेक रूपगरी दैत्य विनाशित गन्या छुन ॥ ३० ॥ विद्यासुरा ॥

४७

देहिं त्वां तिमि क नखणामें गछे ॥ ३१ ॥ विद्याररात्रा वाक्य शस्त्रमाति निवाहि आद्यो को छ म मता बाडल मा अंधकार संसार समुद्रमा विधामी त सं
सारगन्या तिमि छे ॥ ३२ ॥ रक्षासि ॥ राक्षसले उग्र विषवंत सर्प ले शत्रुका वलले समात्पाको भयावनका अग्निले जलायाको भया रति दुःखका मा
तिमिरक्षागछे ॥ ३३ ॥ विष्णोस्त्व ॥ हे विष्णेश्वरी तिमि कस्ता छे जगत्प्रभुवं घत्पछे संसारमा तिमि माधि भक्ति ले जो नवित भयाका लोक धन्य छ ॥ ३४ ॥
देवि वसी ॥ हे देवि तिमि हामि माधि धेरै सत्तन भरी दिया अरि शत्रु को जो भय छ त्यो भय कन प्राप्त गन्या समस्त जगतका पापको क्षय गन्या ठत्या त
उपश्रवको क्षय गन्या महोपसर्ग रतिको क्षय गन्या ॥ ३५ ॥ ॥ यशस्तानां ॥ हे देवि त वाचरण कमलमा जो नवित भयाका तिन माधि प्रसन्न भया तिमि आ

चं भा.
५०

निहारी छौ तीन लोकमास्तत्पछौ वरदिन्या छु ॥ ३४ ॥ देवु बाव ॥ वरदा हं ॥ देवी कहं थी न हे देवता होत वा मनसा ज्याकां क्षाह्य त्यो माग मदि उला ति
मि उपकार मूर्ति आफै छौ ॥ ३५ ॥ देवावुनुः ॥ सर्व बाधा ॥ देवता माग छं सर्व क्यसु मस्त बाधा को ना राग न निमित्त यो कामत पाइले सदागनु ह्यो वैरि
को क्षय गन्या सु ॥ ३६ ॥ देवु बाव ॥ वैवस्वतं ॥ अष्टाविंशति कलि युग मध्ये वैवस्वत नाम मनुका अंतरमा शुभनिशुभरा जाउत्यनु कुन्या छु ॥ ३७ ॥ मन्दः
गोपगु ॥ त्यस दिन मा मै ले नन्द गोप का घरमा जन्मली जशोदा का गर्भबाट उत्पन्न भई विंध्या बलमा वसी देत्य को ना राग न्या दु ॥ ३८ ॥ पुनरप्य ॥ फे
री पनि रोउ रूप ले पृथिवी तले माउत्री कन वै प्रवि त्त दानव हरु लाई हा न्या दु ॥ ३९ ॥ भक्ष्ययं त्या ॥ वै प्रवि त्त जो महा देत्य छु न उग्रतन कन मखाः

द्याहू जूना दिन महा दशदिम का फूल को उपमा जस्मा छु त्यस दिन मा ॥ ४० ॥ ततो मां ॥ स्वर्ग लोक मा देवता मर्त्य लोक मा मानि सले मेरो रक्त दंतिका नाम को
द्याख्या नग न्या छु न ॥ ४१ ॥ ततः शनि ॥ तहापछि शयनेत्र ले भविश्वर लाई म देख न्या दु मानि सले शताक्षी भनि मेरो स्तुति गन्या दु ॥ ४२ ॥ ततो मां ॥
तहापछि अखिल लोक को पालना आफ्ना देह वाट नि सक्या को राग कले बर्षा न दु न्या संमग न्या दु तेहि देत्य को वध ग दु ॥ ४३ ॥ शाकं भरी ॥ त्यस
दिन मा मेरो नाउ शाकं भरी भनि प्रक्षांत दु न्या छु तेहि देत्य को वध ग दु ॥ ४४ ॥ दुर्गा देवी ॥ दुर्गा नाम मेरो प्रख्यात दु न्या छु फेरि हिमालय मा वसी भी
म रूप गन्या पछि ॥ ४५ ॥ रक्षांसि ॥ राक्षस को भक्षण गन्या दु मुनि को रक्षा गन्या दु त्यस दिन मा न प्रवृत्ति ले मेरो स्तव दु न्या छु ॥ ४६ ॥ भीमा दे ॥ भी

वे. भा.
५१

मादेवी भानि मेरो नाम प्रख्यात हुन्या छ जूना दिनमा अरुण नाम देत्यले तीन लोकमा वाधा गर्नु छ ॥ ४० ॥ तदाहं ॥ त्यस दिनमा भ्रामर रूप गरी असं
ख्य बह्म पद भई महासुरको विनाश गर्नु छु ॥ ४८ ॥ **धामरी** ॥ धामरी भनि मेरो नाम लोकमा प्रख्यात हुन्या छ जूना दिनमा देत्यले उत्पन्न गन्याः
को वाधा हुन्या छ ॥ ४९ ॥ तदाहं ॥ त्यस दिनमा शत्रुको लय हुन्या छ ॥ ५० ॥ ॥ इति मार्कण्डेय पुराण ॥ ११ ॥ देव्युवाच ॥ अभिस्तवे ॥ दुर्गा कहं धी
यस्य स्तोत्रले मेरा स्तव श्रवण कथन योग ली तस्का समस्त वाधा को विनाश गर्नु छु ॥ १ ॥ मधुकैठ ॥ मधुकैठ भक्ताना शमहिषा सुरकाना शत्रु
भनिशुं भवध जो कोहि पाठ गर्ला ॥ २ ॥ **अष्टम्यां च** ॥ अष्टमी मानव मीमायतु ईश्वरीमा रूक विन भई यो मेरो उत्तम माहात्म्य जो भानि सुनला भ

५१

क्ति पूर्व गरी ॥ ३ ॥ **नेमिषां जा** ॥ तिनका घरमा दुःख केहे पनि हुवेन आपति पनि आवेन दारिद्र्य पनि हुनेन दृष्टि विजोग पनि हुवेन ॥ ४ ॥ **शस्त्रोत्तम** ॥
शत्रु वाट भय नहुन्या यो रको र राजाको भय नहुन्या ते रवारको अग्नि को जलको भय केहे पनि नहुवस ॥ ५ ॥ **तस्मान्ममै** ॥ तस्कारण यो मेरो माहा
त्म्य परम भक्ति ले मानिस हरु ले सदा काल सुनु परम कल्याण हुवस ॥ ६ ॥ **उपसर्ग** ॥ उपसर्ग जो छन ति दूर होला जाउ नमहामारी पनि रा
त भई जाउ न त्यस्तो ती न प्रकारको उत्पात शान्त भई जावस ॥ ७ ॥ **यज्ञेन त** ॥ जहा जो मेरो माहात्म्य पाठ गर्नु त्यस जग्गामा मेरो संनिवास ल्ख
त्यो जग्गामे ले छोडनु छन ॥ ८ ॥ **वलिप्रदा** ॥ जहा वलि दान हुन्छ जहा पूजा विधान हुन्छ होम भयाको जग्गामा यो चरित्र वेदा गरी सुनु

कहनु ॥ १ ॥ जानता ॥ जाननी कनन जानिकन न्या को ही पूजा गन्या गन्या को तो ह कमै रास्त व पाठ ले संपूर्ण होला ॥ १० ॥ **शरत्काले** ॥ शरत्काल
भन्ना आश्विन दशै मा जो मेरो महा पूजा गर्छन् जो ये त्या दशै मा मेरो महा पूजा गर्छन् भक्ति पूर्वक संदेछ ॥ ११ ॥ **सर्वबाधा** ॥ मानिस का रामस्त
बाधा दूर जाव स धन धान्य छे राहरु ले संयुक्त हव स मन का पना पाठ ले पुगलो ॥ १२ ॥ **श्रुत्वामे** ॥ ये मेरो माहात्म्य कन रात्रो गरी सुन्या उत्पत्ति
धेर हव स सब जगामा निर्भय होला ॥ १३ ॥ **शिवः** ॥ शत्रु को क्षय हव स कल्याण वहु तै होला मेरो माहात्म्य सुन्या का कुलमा आनन्द होला
॥ १४ ॥ **शांतिकर्म** ॥ शांतिकर्म मा दुःख प्रदर्शन मानव ग्रह ले गन्या का पीडा लाग्दा मेरो माहात्म्य सुनु ॥ १५ ॥ **उपसर्ग** ॥ उपसर्ग जति भया

: का शांत भई जाउन् ग्रह पीडा शांत हवन् ॥ १६ ॥ **बालग्रहा** ॥ बालग्रह वाटउ पडव भया का बालक को शांति गन्या हवन्
संघाट भया मा मैत्री गन्या उत्तम हवन् ॥ १७ ॥ **दुर्बला** ॥ समस्त पृथिवी मध्ये मा ज्ञा के ही भया का दुर्बल को बल हा निहव स राक्षस भूत निशाच
हरु पाठ गन्या मात्र ले जाउन् ॥ १८ ॥ **सर्वममे** ॥ समस्त मेरो माहात्म्य जो छु त्या मेरो तुष्टि गन्या छु बलिदान र पुष्प धूप दीप उत्तम चन्दन ले ॥ १९ ॥
विषाखा ॥ नित्य ब्राह्मण भोजन दिया ले होम गन्या ले नित्य हविषे कन्या ले जो वर्ष दिन संमम संग प्रीति गर्ला त्यसको फलित एक आहुत
पाठ ले होला ॥ २० ॥ **प्रतिष्ठा** ॥ यो सप्त सती पाठ रात्रो तरु वित्त लाई कन सुन्या पछि पाप काटि यला आयु वधला ॥ २१ ॥ **रक्षा करो** ॥ मेरो कीर्त

च. भा.
५३

नकनजोमानिसजनन्यावेलामागरोसरहाहोला लडाईमापनिपाठगयापहिरधाहोला ॥२२॥ तस्मिंश्रुते ॥ येस्तवपाठसुन्याकोशत्रुलेगन्याको
भयनहवसजोतिमिहुरुलेगन्याकोस्ततिजोवहभिलेगन्याकोस्तति ॥२३॥ **वस्त्रगाव** ॥ वस्त्रालेगन्याकोजोस्ततिहत्यापहुनुवनेमाघातभ
याभाअग्निलागदासाभध्यमापन्याको ॥२४॥ **दस्युभिर्वा** ॥ शून्यजगामाजोरलेसमात्याकोभयरात्रुलेपक्र्याकोभयाकी ॥ सिंहवाघवनहाती
लेवनमाघेन्याको ॥२५॥ **राजाक्रुद्धे** ॥ राजाआपुमाथिगुस्साभयाकीवाधाकोबन्दीमापन्याकोभया ॥ भवरीमातलेकीसमुद्रमानहीमाधुगा
दुदुनलाग्योभन्या ॥२६॥ **पतन्सुवा** ॥ बडोलडाईभयामास मस्तन्याभयाकावाधाआईपन्याकोकरुज्याकेहीआईपन्याकोभयदेखि ॥२७॥

॥ स्मरन् ॥ मोमेरोचरित्रस्मरणगन्यालेमहासंकटवातमुक्तहोला मेराप्रभावलेसिंहारिखोरवेरिलेपक्र्यामा ॥२८॥ **दूरेदेव** ॥ दूरदेखिबिभागिजाउ
नमेरोचरित्रस्मरणगर्नमात्रेमेधाअभिभरुनयस्तोवाक्ययष्टिकादेवतामाथिगर्थीन ॥२९॥ **परमसा** ॥ सबदेवतादेखनमात्रअंतर्हीनभइनति
देवताहरुअक्राअधिकारमावसथ्या ॥३०॥ **यज्ञभाग्य** ॥ यज्ञकोपुण्यकनदेवताहरुआंध्यादेवताकावेरिज्याभयाकाशुभादिकोनाशहुं
थ्या ॥३१॥ **जगहिधं** ॥ संभनिशुभरदैत्यमन्यापछि ॥ अरुजोवाकिरखाकोदैत्यपातालमापुगथ्या ॥३२॥ **स्वभग** ॥ यस्तातरहसुगभगव
नीपनिफेरिभवतारलिदैजगत्ससारकोपालनागर्थीन ॥३३॥ **तयेतमो** ॥ तिमलेयोस तारमोहितगन्याकोहृविश्वकोउत्पन्नगन्यातिनेडन

सं. भा.
५४

तिनिदेउमाग्यापदि ज्ञानपनिपाइछु संपत्तिपनिपाइछु ॥ २४ ॥ **व्यास** तथै ॥ हेसुरराज होतिनलेयेख सारदरव्याको **काली** मा
हामायास्वरूपलेअभिव्याप्तगयाको ॥ २५ ॥ **संयकाले** ॥ तेदुर्गाकालमा महामारीस्वरूप **हामारी** म
स्थितिरूपहुन्छन ॥ २६ ॥ **भवकाले** ॥ उत्पत्तिगर्दातिनिले लक्ष्मीवृद्धिगरिदिछुन **पछु** सुदिकालमा अजात रूप **हति** सतुष्ट भयापदि
स्तता संप्र ॥ त्यस्तातिदुर्गाकनराघ्रातरहकीतिनीको पूजा धूपगंधादिले ग्यापदि **होरा** छन धर्ममतिहुन्छ ॥ २७ ॥
इति मार्कण्डेयपुराणे ॥ १२ ॥ ॥ **भविष्यवाच** ॥ सततैकथि ॥ मेधाजविभंछ हेसुरथराज हो **यो** देवीको माहात्म्यमैलेतिमिलाई **क** ह्याः

यत्वाप्रभावकीजोजगदंवाछु तनकनजसले संसारधारेछु ॥ १ ॥ **विद्या** तथै ॥ भगवानकीजोमाया छु विष्णुमायामैतिनलेतलाईसर्वे
रूपलाइरज्जुमानिसकन ॥ २ ॥ **मोह** तथै ॥ मोहितगन्यापनितिनेछु **तिमि** हरूपनिमोहितभयाकोछो **तन** कोसेवागन्यापदिकामनाछु
गलापरमेश्वरीकोशरणगर ॥ ३ ॥ **आराधिता** ॥ तनकोआराधनागन्यालेभोगकोस्वर्गकोमोक्षपाउला **मार्क** ण्डेयभंछन **र**
स्तोमेधाकोवचनसुनिकनसुरथनामराजले ॥ ४ ॥ **प्रणिपत्य** ॥ मेधानामभविष्याउपरि **अं** वाकोविधिसुनिनिर्विशममतालेग
याकोराज्यछोद्याको ॥ ५ ॥ **जगामस** ॥ त्योसुरथराजसमाधिर्वैश्यनदीकाकिनारामावसी **दुर्गा** कोदर्शनपाउभनिकाक्षालेनपस्या

चे. भा.
पथ

गथी ॥६॥ सखे वैश्य ॥ तो वैश्य नदी का किनारा सा बसि कन मही को दुर्ग मूर्ति बनाई ॥ यो सप्त सती पाठ गथी ॥७॥ अर्चि गां ॥ तिहुई
जना पुष्प धूप अग्नितर्पण गरी ॥ निराहार ले संयता न्या संगत स्माधि मन वसाई कन स्तुति गथी ॥८॥ दहलु बौ ॥ राजार वैश्य हुई ज
ना अफ्रा देह वाट सिंकार का टि वलि पनि दि ॥ ध्याय स्ता तरहती न व व सं म आराधना ग दायता सा कुं हा ॥९॥ पति सुख ॥ जग द्वात्री ॥
जो चलि का छन ति प्रत्यक्ष भई कह थी ॥ हे भूप हो ते रो क्यो कां छा छ ॥ हे वैश्य ते रो क्यो छ ॥१०॥ न सल ॥ ति मिहुई जना को कां छा
महि दु पसन भया को छ ॥ मार्कण्डेय भंडन ॥ तहा पदिरा जाले आ फुरा जनि भय गरि मा गथी ॥११॥ अत्रै वच ॥ शत्रु का

मह वसु वल पनि दूर जा वस ॥ तो वैश्य पनि तत्व ज्ञान मागी ममता छोरि बस थो ॥१२॥ ममेत्यह ॥ वैश्य भंड ये मेरो ॥ यो तेरो न दु न्या संग प्रस
न हव स भडा देवी कह थी ॥ हेरा जा हो ते ले अव थो रे दिन मा रा ज्य पाउ ला स ॥१३॥ हत्वारि ॥ समस्त आफ्रा शत्रु माली सरा ज्य ते रो अस्व
लित दु न्या छ म न्या पछि फेरि जन्म ली कन वैवस्वत मनु बाट ते ले ॥१४॥ सावर्णिको ॥ सावर्णिना ममनु प्रख्यात कुतु छ पृथिवी मा हे
वैश्य ते ले मा ग्या का वर दिया ॥१५॥ तं प्रयच्छा ॥ तला दू ते रो कां छा पु गो स न त्व ज्ञा नी भया स ॥ मार्कण्डेय भंडन ॥ हे जे मिनि भवि श्वर य
स्तो दुई जना लाई मनो शो पु ग न्या वर दी कन ॥१६॥ वधू वीत ॥ आ फुरा जनि भय गरि मा गथी ॥१७॥ अत्रै वच ॥ शत्रु का

चरणी भा-

पद्य

वी वाट वरपा ईकन सुरथ राजा ॥ १० ॥ स्वामी जन्म ॥ तू ये वाट जन्म पाईकन सावर्णिता ममनु ॥ चरया त होला ॥ ११ ॥
इति मार्कण्डेय पुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवी महात्म्ये सुरथ समाधि वरप्रदाने दुर्गा महात्म्ये संपूर्णम् ॥ शुभम् ॥ अयोस्तु ॥
स्वहरति हं विप्र श्रीरूपशंकरा चोयाश्च सुनानलोभया यमदुलोभया तसामहापापनाश ओजुलो शुभम्
संवत् २३२ मिति सख संपुलि चोया श्रीदुर्गा प्रीतिरस्तु ॥ अयोस्तु ॥ श्रीगोपीनाथाया नमः ॥ श्रीरामाय ॥

१ श्रीदुर्गा माहात्म्ये पाठ पुस्तक मिह ॥ ॥

ॐ नमः शिवाय ॥ ॥ अथ सप्तवतीका पथमच निष्पद्येत् ॥ अथ विष्णुयणीक द्यौमहाकाली देवगानक दक्षिका दीर्घा नन्दजा नकिः ॥ अथ
तर्ह्यसर्वकृणममनार्थमतीष्टदुःखपाशोऽर्थजयो विनिर्माणः ॥ ॥ मार्क ॥ पुनरुवाच ॥ सावर्णिः सूर्यतनया १ महामाया नरावन २ स्वाभाविक
पदार्थः ३ तस्यापानयतः सम्यक् ४ तस्यैतन्नरवशूङ्ग ५ ततः स्वपूजमायाता ६ अमात्यैर्बलिददौ ७ ततो मृगयायाजं ८ सततं यम
मडाकी ९ ततो कश्चित्कालं १० सा विष्णुमकदातं ११ महर्षेणैतत्तद्वत् १२ समवेतिवर्णीयतः १३ अनवृत्तिं कुर्वन्त्य १४ सन्निवृ
त्तिः सानिदुःखेन १५ तेषु विजायमायात १६ सत्त्वकं वदस्मात् १७ पश्यन्वाच सतं वै १८ विष्णु उवाच ॥ समाधिर्नीमवेत्यह १९ विद्मी

[illegible]

धाक्येकपविनियोगः॥ ॥मृषिवाय॥ देवास्तनमहद्युं ॥१॥ नगसर्पैर्महावीर्यं ॥२॥ ततः पत्राजितादवा ॥३॥ यथा
 दृढं तयोस्तद्व ॥४॥ सूर्यद्वान्निर्जन्तुनां ॥५॥ सुगन्धिनाहतास्तर्ष ॥६॥ एतच्चः कथितं सर्वं ॥७॥ संतुष्टिगम्य देवानां ॥८॥
 ४ कलातिकाययुग्मस्य ॥९॥ अथैवाऽश्वदेवानां ॥१०॥ अतीवतजसः कूट ॥११॥ अंगुलीरिहजः ॥१२॥ यदहं कान्तं
 तज ॥१३॥ सीम्यनस्तनयो र्गमं ॥१४॥ उन्नतस्तजसायादी ॥१५॥ तस्यामुदकाः सीतला ॥१६॥ प्रवीचसीयास्तजः ॥१७॥ तत
 स्तमस्तदेवानां ॥१८॥ गूलं गूलादितिः कृष्ण ॥१९॥ गीरवश्चैव नृगः गकिं ॥२०॥ वज्रमिन्दुः समत्योद्य ॥२१॥ कालदधुषमादधु

२६॥ समस्तनामकययू ॥२७॥ कीनादक्षमलंरान ॥२८॥ अर्धवचनं तथा गुणं ॥२९॥ अंगुनीयकनत्तानि ॥३०॥ अस्कायनकनूपाणि ॥३१॥
 अददकं धिरुह्ये ॥३२॥ ददाय गूनांस्तनया ॥३३॥ नागरान्ददीतस्ये ॥३४॥ सम्मानिताननायाद्ये ॥३५॥ अमायतातिमहता ॥३६॥ य
 वालवसूधाचेलः ॥३७॥ उद्धूर्मनयस्येनां ॥३८॥ सन्तडाखिलस्येनां ॥३९॥ अथैवावतर्गनद ॥४०॥ पादाकानतपुर्व ॥४१॥
 दिग्भाजुजसदुर्ध्व ॥४२॥ नकास्तुर्वदक्षमकी ॥४३॥ ययूधवाग्नश्च ॥४४॥ अयधुनायूतानाञ्च ॥४५॥ अयूतानां नृगैः ॥
 वशि ॥४६॥ वृतावधानां कोशाव ॥४७॥ ययूधर्षयूगत्त ॥४८॥ ययूधूः सीयूगदद्या ॥४९॥ दद्यानाञ्च वृतायूध ॥५०॥ ययूधूः सीयूगदद्याः

११३ दवीसिप्रवर्णमु ११४ लीलयेवपविकृत ११५ ममूकसुनदंष्ट्र ११६ यवागामुनदंष्ट्र ११७ तववसयःसमुता ११८ नागचक्रासुन
 नक्षत्र ११९ मृदंगमथतथेवाय १२० स्वजादितिश्वनतला १२१ असुनानुविषाणन १२२ विषाधितानिषाणन १२३ कविनिषतिताहमी
 १२४ लनानुविषाणन १२५ निनासियेयुनयथा १२६ उकवाकृदिवनता १२७ कवन्धयूयुधुष्टा १२८ कवन्धयू
 ननिनस १२९ पातिनेनथनागारे १३० लानिनाद्यामहानद्य १३१ कालनतमहासेन्य १३२ तवसिंहामहानद्य १३३ दद्यागले
 सुतेक १३४ ॥ ॥ ॥ इति श्रीमार्कण्डेयपुराणसावर्तुिकमन्त्रकनदवीमहात्म्यमहिषासुनसेन्यवधः ॥ ॥ ॥ मृगिगव

॥ निरुन्यमानेतसेन्य १३५ सदवीननवर्षन १३६ तस्यकिदाततादवी १३७ चिकुदयधनःसद्यो १३८ सकुनधन्वाविनथा १३९
 सिंदुमाहस्यखर्जन १४० तस्याःस्वप्नोर्जुजाय १४१ विद्वययततक्त १४२ दृष्टातदापतक्त १४३ दृष्टातसिन्धुवीर्य १४४ सापिनीः
 किंममाजाय १४५ तस्यांकिनिषतिता १४६ ततसिंदुसमस्यस्य १४७ यद्यमानेततक्त १४८ तमावगदस्यस्य १४९ उदगधन
 रतदद्या १५० दवीकुजागदापते १५१ उगस्यमृगवीर्य १५२ विजालास्यातिनाकाया १५३ चर्वसदीयमानतु १५४ कांशि
 उगुपुनयेन १५५ वरगलकांशिदयता १५६ निषात्यप्रमथनीक १५७ सापिकावाग्महावीर्य १५८ वंगमनविद्रुता १५९ पुनर्न

गविरित्नाथ १८० ॐ तिकाधस्तमाध्यात १८४ सादिष्टातस्यवेपथु १८२ ततस्तिंहातवस्तथा १८० तत उवाच पुनर्व १८१ कनक
वमहासिंह १८२ ततमहासुनाह्या १८२ ततकुंहाजगन्माता १८४ ननर्दवास्तनंसावि १८९ सायमानुषदितोस्तन १८० ॥ ॥
दंष्ट्राय ॥ गऊं गऊं दूर्गा दूर १८० ॥ ॥ मृगिन्वाच ॥ उवमस्तासमस्तस्य १८० ततः साविपदाकांत १८४ अर्द्धनिःकाक उवाः
तो १८२ तताहाराकर्तसर्व १८० उवमस्तासनादवी १८१ ॥ ॥ ॐ तिकाधस्तमाध्यात १८४ तत उवाच पुनर्व १८१ कनक
वमहासिंह १८२ ततमहासुनाह्या १८२ ततकुंहाजगन्माता १८४ ननर्दवास्तनंसावि १८९ सायमानुषदितोस्तन १८० ॥ ॥
दंष्ट्राय ॥ गऊं गऊं दूर्गा दूर १८० ॥ ॥ मृगिन्वाच ॥ उवमस्तासमस्तस्य १८० ततः साविपदाकांत १८४ अर्द्धनिःकाक उवाः
तो १८२ तताहाराकर्तसर्व १८० उवमस्तासनादवी १८१ ॥ ॥ ॐ तिकाधस्तमाध्यात १८४ तत उवाच पुनर्व १८१ कनक
वमहासिंह १८२ ततमहासुनाह्या १८२ ततकुंहाजगन्माता १८४ ननर्दवास्तनंसावि १८९ सायमानुषदितोस्तन १८० ॥ ॥

गङ्गा १०२ यस्याः प्रणवमकुलं गवाननुको १०४ यात्रीः स्वयं सुकृतां रवनं खलु १०६ किं च धुंयानवमूयमयि न्य
मंतन १०८ हंतुसमस्तजगतां विरुद्धा पिदां ११० यस्यांसमस्तुतनासमूदीनान ११२ आसुकिं हंतुं विविं सहा वता ११४
गङ्गात्मिका सुविमलरश्मि श्यान्निधान ११६ मंक्षसि देवि विदिता खिलमसुमाना ११८ श्री बल्लासममलैयनि पूर्युवन् १२० दृष्टुं
देवि कृपितं पुं कृटीकनाल १२२ देवि प्रसीदयन् मां वती हवा य १२४ तं स म्मता जनय देव धनानि तं धा १२६ धर्म्या नि देवि सकला
नि स देव कर्मा १२८ दूरं न स्मृता हवसि हीति मरणा मज्जाकाः १३० एहि हं ऊं ग दूयेति सर्वं तथेत् १३२ दृष्टुं वकिन्न हवती यकना

मितस्त १०२ स्वप्नचरानिकनविस्तुननेस्तथा १०३ ॥ इहैरुदकममनंतवदविनीलं १०४ कंनोपमाहवसुतस्ययशकमस्य
 १०५ उलोकाभतदाखिलनिघनामनेन १०६ ॥ ॥ गूलनपाहिनादेवि १०७ पाद्यांनद्वयतीद्या १०८ सीम्यानिघानिदूपाः
 १०९ ॥ ॥ स्वप्नगूलगदादीनि ११० ॥ ॥ मृषिप्रवाच ॥ अर्वमुतासुयेद्विद्यो १११ तस्मात्समस्तद्विदानी ११२ ॥ ॥ दंष्ट्रावा
 च ॥ विमतीद्विदग्नाः सर्व १०० ॥ ॥ दंष्ट्रादुदः ॥ तग्वस्याकृतसर्व १०१ यदिजापिवनादय १०२ यद्यमर्त्यसुवेनति १०३
 दृष्टयस्तत्पुत्रसन्नात् १०४ ॥ ॥ मृषिप्रवाच ॥ ॐ तिष्ठसादितादवे १०५ ॥ ॥ यतत्कथितंरूप १०६ पुनश्चगोत्रीदहासाः

नकलायचलाकानी १०७ ॥ ॥ ॥ ॐ तिष्ठीमार्कः ॥ गुयपुनात्मसावर्षिकमन्त्रकनदवीमाहात्म्यगजादिमुक्तिः ॥ ॥ ॐ अ
 स्यश्रीमफसतिकाडहनचनिगस्यद्रुडमृषिननदृष्टुः श्रीमहासमस्ततीदवताहीमानकिः ॥ अमनीवीजीसूर्यगर्तसर्वकृगममनार्थः
 महीसूर्यलयास्वर्थजयद्विनियोगः ॥ ॥ ॥ मृषिप्रवाच ॥ पुनालुंरनिगुकास्यां १०८ तावद्वस्तुर्थातिद १०९ तावद्वय
 वनद्विष्ट १०९ द्वाधिकावादिदग्ना ११० तद्यास्माकंदनादला १११ ॐ तिष्ठत्वामतिन्दवा ११२ ॥ ॥ दंष्ट्रादुदः ॥
 नमाद्वीमहादवी १०३ नीजायेनमानिस्थायी १०४ कल्याणीषलतावृष्टी १०५ दृष्टयैदृष्टयानायी १०६ अति

[illegible]

नाथ्यां शुभ्राय चारुणाता २४१ नैवतादृक् विदुषं २४२ श्रुतमतिवर्धनी २४३ यानि वृत्तानि मनैः २४४ उभावतः समानीता २४५ वि
मार्नहंससंयुक्ता २४६ निधिवद्यमहापद्मः २४७ कर्णतवावर्णमहं २४८ मृत्पान्त्राकिदा नाम २४९ निशुभ्राय चारुणाता २५० नुर्वदेत्यनुः
नत्तानि २५० ॥ ॥ मृषिन्वाच ॥ निशुभ्रतिवचः २५१ ॥ नितिवतिवचः २५२ ॥ ॥ मृषिन्वाच ॥ सतपन्त्याय जात २५३ ॥ ॥
दूत उवाच ॥ दं वदेत्यनुः २५४ अद्याहतास्तुर्वीस २५५ ममर्षेलाक्षमखिलं २५६ उन्ताक्षवन्नत्तानि २५७ कोनादमथनोः
दूत २५८ यानि वृत्तानि दवं २५९ श्रुतमहतात्वादि २६० माम्नाममानर्जवापि २६१ पत्रमैश्वर्यमखिलं २६२ ॥ ॥ मृषिन्वाच ॥

[illegible][illegible]

धनुष्ये ३०२ नृकंजसादकं मय ३०३ तैर्मका निवर्ग मालि ३०४ बलिनी तद्वर्ग सर्व ३०५ असिना निरुताः कवि ३०६ करानन तद्वर्ग
 सर्व ३०७ मयवर्ग मकाहीमे ३०८ मयिजका यानका नि २०९ ततो जका साति नया २१० इका यवमहा सिद्ध २११ अथमः पुष्पावर्ग २
 १२ हतगर्वततः सैर्ग २१३ तिन पुष्पावर्ग २०४ मया तवाला यद्वर्ग २१५ ॥ मयि नवाव ॥ गावानी तौ तका दद्या २१६ यस्मात्तु पुष्प
 पुष्प २१७ ॥ ॥ तिनार्कः पुष्पयाना पुष्पावर्ग सावधिक मय न नंदवी माहासा बलु मयुवधः ॥ ॥ मयि नवाव ॥ वर पुष्प निरुत दैत्य
 २१८ ततः कायवर्ग मधीन २१९ अथ सर्ववर्ग दैत्या ३२० काटिदीर्घा निषय ३२१ कालका दीर्घता मोर्षा ३२२ तत्ताका पासुनपतिः ३२३

आयातं वलिरुद्ध ३२४ तता सिंहा मका नाद ३२५ धनुष्ये सिद्ध मका ना ३२६ तन्निना दमयय ३२७ उत सिद्ध न नंदय ३२८ उमे
 गुद विष्णु ना ३२९ यद्यदं वस्यय दूर्य ३२९ दैत्ययुक्त विमाना ३३० माह्वनी द्या नृदा ३३१ कौमावी गकि द्वाव ३३२ तथेव वक्त्रवी
 कि ३३३ यस्मात्ताह मगुर्ल ३३४ नाव सिद्धी नृ सिद्ध ३३५ वज्रहस्ता नथे वीदी ३३६ ततः पवि वृत्त साहि ३३७ तता दवी मनी नाकु
 ३३८ सावाह्व मज्जटिले ३३९ वृद्धि पुष्प निष्पु मय ३४० उलाञ्छ निष्पु लता ३४१ वलावर्ग पादथय ३४२ यमो निष्पु का दीत्यन ३४३ तपि
 पुष्पावर्ग दद्याः ३४४ ततः पथममं वा ३४५ सावता न्युहिलान्वा लान ३४६ तस्याग तत्ता काली ३४७ कमलु लो जला दीप ३४८ मा

हं श्री विष्णु तन ३४६ उन्नी कलिंगा तन ३४७ पुपुषा न विधुला ३४८ नखे विदानी गान्ध्या न ३४९ वल्लु दहा सेन सना ३५० इति माह
 गर्व कर्ष ३५१ यत्ना मय यनानुदृष्टा ३५२ नक विदु मी दाहमी ३५३ युयु वसुगदा पानि ३५४ केलि गना दत स्यात् ३५५ याव नः पतिता
 सस्य ३५६ तवापि ययु मरुत ३५७ पुनश्च वरु यातन ३५८ वेष्म वी समन वन ३५९ वेष्म वी चक हि नस्य ३६० गच्छा घान मो को मनी ३६१
 सवापि गद याद रयः ३६२ तस्या दत स्य वद ३६३ ते अ सुना स र्क रते ३६४ तानु विष्णु सना नुदृष्टा ३६५ मरु मुया त स र्क रता ३६६
 ह कय को वचन ३६७ ह कमाना स्त्रया वा ग ३६८ मुख को ली ला गृह ३६९ नवा स्या वंदना ३७० यत रुत रुद रुत ३७१

१०

श्रवादा ॥ ययामु ३७२ कछानन कवी जंत ३७३ नीन क छम ही पाल ३७४ तया माह गर लभ जाता ३७५ ॥ ॥
 ॥ इति श्री मा केलु ययु गला सा चरुि क म न क नंद वी माहा स्मृ न क वी उ वधः ॥ ॥ ॥ नाजी वाय ॥ विवि तु मिद मा रघा त ३७६ हय र
 कु म्य ह र यार्तु ३७७ ॥ ॥ मृ वि न वा य ॥ चकान का य म रुत ३७८ ह न्य मान म हा से र्वा ३७९ तस्या गत रुत अ पृष्ट ३८० अ क छान
 म हा वी र्चः ३८१ ततो य द म ती वा सी ३८२ वि कं दा स्त्री यु ना ग र्वा ३८३ त्रि तु क्ता नि नि र्ग र्ज ३८४ गा ठि त वा द नंद वी ३८५
 कि न्द व र्म नि वि ष्णु न ३८६ का वा ध्मा ता नि तु का थ ३८७ आ वि अ थ ग दा मा वि ३८८ ततः प न गु ह र्क र ३८९ तस्मि न्नि प ति त

हमो ३२३ सनथसुसुअख ३२४ तमायार्कसमाजाख ३२५ पूनयासुककूला ३२६ ततसिंहामहाना ३२७ ततःकाली
समस्यस्य ३२८ अदृष्टासमनिर्व ३२९ इनासंक्षितिधिति ४०० गुह्यनागखयागकि ४०१ सिंहादमनुमुख्य ४०२ गुह्य
मकां कुनादवी ४०३ ततःसावयुकाकुडा ४०४ अंजुचानंनवीद्वी ४०५ ततानिर्गुला ४०६ सीपाय ४०७ यूनधकता
वाहुना ४०८ ततःहगवतीकुडा ४०९ ततानिर्गुलावरगन ४१० तस्यायततजबास ४११ ततःहकममायांत ४१२ तिनस्यगस्य
लन ४१३ तस्यानिःकामतादवी ४१४ ततसिंहश्चखादा ४१५ कीमानीगकिनिलिनाः ४१६ मादुधजीविमूलन ४१७ स्व

[illegible]

[illegible]

१३

॥ १ ॥ ४८० ननवागवदीनार्ह ४८१ हंसयूक विमानतुं ४८२ विमूलचट्टादिधनं ४८३ मयूनककटवृत्तं ४८४ लीखकगदागमैर
 ४८५ शृङ्गीमागमहायकं ४८६ नृसिंहनृपलारगव ४८७ किनीटिनिमहायकं ४८८ निवदूतीखट्वयं ४८९ दंडकनालवदनं ४९० लक्ष्मि
 लक्ष्ममहाविद्यं ४९१ मंथसुनसुतिवनं ४९२ सर्वस्रष्टृपमर्षी ४९३ उत्तलवदनं सोम्यं ४९४ कालाकनालमलय ४९५ दिनहृदय
 तज्जामि ४९६ अस्त्रनालस्यस्य ४९७ जगन्नालानपहीतिगुहा ४९८ उत्तलनयत्कदनं त्वया ४९९ विद्यासंगमसुखविदकदीप
 नक्षत्रियवागविद्याश्च नाग ५०० विरम्बन्वनीत्वं पनमासि विम्बं ५०१ दंविप्रसीदयनिपालयनाग विहीतं ५०२ पलातानापसीदत्वं ५०३

॥ ॥ दक्षवाच ॥ वनदाः दुर्गमगण ११२ ॥ ॥ दक्षवाच ॥ सर्ववाधाय गमनं ११३ ॥ ॥ दक्षवाच ॥ वेवश्वतः कनकाय ११४ नन्दमयम्
 हुंकाता ११५ वृत्तव्यतिर्गुण ११६ रुद्रयन्त्राश्चानुग ११७ ततो माद्वेवताः स्वर्ग ११८ ह्ययश्च तवाधिष्ठा ११९ ततः ततः ततः
 १२० ततो ह्यमखिलं लोक १२१ ततः कनूनीति विख्यातं १२२ दूर्गादेवीति विख्यातं १२३ नदीसिद्धयमिच्छामि १२४ सीमादेवीति विख्यातं १२५
 तदा ही जामर्गं नृप १२६ जामर्गं तद्वर्माका १२७ तदा तदाऽवतीर्णी १२८ ॥ ॥ ॥ निष्प्रमाणां सुययुतां लसावां कुंभं नन्दमयं देवीः
 माहात्म्यं नायाय विभुतिः ॥ ॥ ॥ दक्षवाच ॥ नहि कुर्वे प्रमानिर्त्य १२९ मधुकैरुनाम १३० गरुड्या उच्यते १३१ नन्दमयं देवीः

॥ १३२ नृपमानर्यं तस्य १३३ तस्मात्तमेतन्माहात्म्यं १३४ उपसृज्यते नरैर्गर्भासु १३५ यजेत स्य शतं सम्यक् १३६ वलिपदानं पूजाया
 १३७ जानता जानता वापि १३८ बालगुहाहिरुगानां १३९ दुर्विलानामरण्यानां १४० सर्वममेतन्माहात्म्यं १४१ विष्णुर्गर्भाजनेर्ह
 मे १४२ श्रीमिन्मक्रियत सास्मिन् १४३ नदीकर्मोक्तिरुक्तया १४४ तस्मिन् प्रतयेनिरुक्तं १४५ वज्रपावकतास्मासु १४६ दक्षप्रतिर्वावृ
 तं नृप १४७ गारुडं नवाकृष्णं १४८ पतस्रवा विमलं सु १४९ स्मरन्ममेतन्नित्यं १५० दूर्गादेवपलायकं १५१ ॥ ॥ ॥ सुविशुद्धा
 ॥ ॥ गारुडा सातगवती १५२ पालीतामबद्वानां १५३ मरुता गजुजः सर्व १५४ जगदिष्टमिनि तस्मिन् १५५ उबं गवती देवी १५६

[illegible][illegible]

चनामोक्तं तदायुक्तं क्रियादिषु । यूनंसीपूतुं यौतांतिप्रसादात्पनमंयनि ॥ ४ ॥ मनुहीनं क्रियाहीनं किंहीनं सन्धनि । यत्पुताः निसयादवित
 स्मात्तवनदा रुव ॥ ५ ॥ अकारुनष्टं प्रजापतिं तदाहोत्स्यं कर्पयथा । विमर्कं नैनजानामिदं विमर्कं त्वं कस्यमे ॥ ६ ॥ कामं न विजगत्तः तः सविः
 मानं न विगच्छ । गृहाणाजीमिमीसं वीपसीदकं नूनानिध ॥ ७ ॥ गुह्यं न गुह्यं रमापुं त्वं गृहाणा स्मृते गप्य । सिद्धिं वदुमं दवित्वं तदाहो
 डिहिसा ॥ ८ ॥

मक्ष्यं भोज्यं चलेहं सकलं दमतुलं चोव्यकं प्राणिभोग्यं . वस्त्रं नाना प्रकारं फलतिमणिरसो
 किं सखे प्रार्थयेहं । प्राप्य श्रीकल्पवृक्षं गजहयनरसारंगपूगादिकानां . यस्मिन् दृक्षेत्तपो
 भिस्तमनिशममेलं बृहपूर्वाद्देवैस्त्वम् ॥ ~ ॥

आश्विन मास
 ASHA ARCHIVE

2006

I

योविश्वप्राणहेतुस्तनुरपिचहरेर्यातकेतुस्वरूपं. यंसंचित्येवसद्यः स्वयमुरगवध्ववर्ग
 गर्भाः पतन्ति। चेश्वरगण्डोस्तुण्डवुद्धितफराणवश्चारक्तशोणोक्षितास्यं. वन्देछन्दोमयं
 तंखगपतिममलंस्वर्णवर्णसुपर्णम्॥ ॥ गरुडस्यस्ततिरियम्॥ ॥ ॥

५

७

आम त्रिपुरे	
2006	I
ASNA ARCHIVES	

५

258
Dev
Hakabura

258
Dev
Hakabura